जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

नवम्बर 2017 प्रथम पक्ष पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

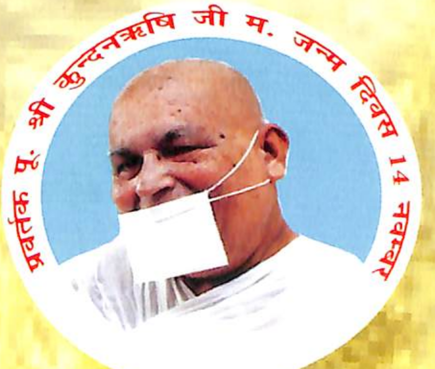

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक वंदन-नमन्

अनंत अनंत आस्था के केन्द्र, जगतवल्लभ
पण्डित रत्न; प्रसिद्धवक्ता, भारत भूषण, संघ एकता के अग्रदूत

प्रभु कृपा से गुरु मिले

गुरु कृपा से प्रभु मिले

जैन दिवाकर पूज्य गुरुदेव श्री चौथमल जी म.सा. की

140 वीं जन्म जयंति

अनंत..अनंत
वंदन ..नमन
अभिनंदन

पूज्य गुरुदेव विरल विभूति आचार्य प्रवर
पू.गुरुदेव श्री खूबचंदजी म.सा. की
144 वीं
जन्म जयंति

ज्योतिषाचार्य महामहिम उपाध्याय प्रवर
पू. गुरुदेव श्री कस्तूरचंदजी म.सा. की
112 वीं
दीक्षा जयंति

-----------वंदन-नमनकर्ता-----------

पन्नालाल भरतकुमार कोठारी

अध्यक्ष-अ.भा.जैन दिवाकर संगठन समिति

राजश्री इलेक्ट्रिकल्स-39/1-एम.टी. स्ट्रीट, बैंगलोर ✻ मो. 9844011908

जयजिनेन्द्र ग्राफिक्स-9806044110

Advt

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशेः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-21 नवम्बर 2017 प्रथम पक्ष 07-08 नवम्बर मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक

अशोककुमार एन. पगारिया जैन

सम्पादन सहयोगी

शेर सिंह जैन

बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

नई दिल्ली

जैन भवन

12, शहीद भगत सिंह मार्ग

गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001

दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420

फैक्स : 011 - 23344380

E - mail

aissjc1906@gmail.com

Website

www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
काम करो	आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.	10
कर्ता व भोगता कौन?	आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनि जी म.	11
महामंत्र की महा आराधना	पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म. 'शास्त्री'	12
जैन का शरीर	पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.	14
अध्यात्म के शिखर ...	पू. श्री रश्मिरश्मि जी म.	15
अंतर प्रकाश और जागृति	पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.	17
जिनके बचपन में ...	पू. श्री आरतज्योति जी म.	19
श्रमण संघ के ...	पू. श्री संयमलता जी म.	21
वास्तविक तीर्थ से ...	श्री अविनाश चोरड़िया जैन	23
परम आदरणीय ...	श्री शांतिलाल नागोरी जैन	24
धार्मिक व्यक्ति ...	डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन	26
साहित्य मनीषी ...	डॉ. दिलीप धींग	27
आध्यात्मिक साधना ...	श्री अशोक खिंवसरा कोठारी जैन	28
अमृत तुल्य पेयजल ...	डॉ. जीवराज जैन	29
विहार मार्गदर्शिका ...	श्री आर. सी. कटारिया जैन	31
ध्यान	सौ. दिपाली सुमतिलाल मुगदिया जैन	32
विज्ञान और जैन धर्म	सौ. निधि दिनेश लोढ़ा जैन	33
समाचार प्रकाश		34
शोक समाचार		47

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोवाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री वालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री बी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री					
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री :					
श्री सुभाष जैन 'लिली', मंगलदेश (पंजाब)				09814699393	
श्री रिखबलाल सांखला जैन, मुंबई				09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा :					
अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव				09823955515	
महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा :					
अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई			09423966963	09820004079	
महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत				09426115241	
जीवन प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **संजय वोथरा जैन,** घोटी				09822596781	
मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09833866852	
जीव दया योजना :					
अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत				09879550981	
मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				08980018801	
मानव सेवा योजना :					
अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर	0731	2531066	2970666	07773866000	531066
मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731	28753681	2780090, 2785232	09425062147	
ज्ञान प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर	080	22383557		09448238429	
मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080	41221890	41223853	09844058123	
वैय्यावच्च समिति :					
अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक	0253	2575799		09422944800	
मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे				09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल वोधरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

सादगी सरलता एवं सहिष्णुता का प्रतीक
महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य श्री कुंदनऋषि जी म. सा.

- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

दीपावली का त्यौहार संपन्न हुआ। आप सभी ने यह दीपावली पर्व हर्षोल्लास के साथ तप, जप तथा दान के माध्यम से मंगलमय माहौल में मनाया होगा। संतवाणी, जिनवाणी तथा अमृतवाणी का श्रवण कर भरपूर आनंद लिया होगा। आप सभी को नये वर्ष की पुनश्चः शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। यह नया वर्ष आपके जीवन में नयी सोच, नया उत्साह, नयी उमंग के साथ आपके सभी संकल्पपूर्ति करने वाला हो यही मंगलकामना।

इस पखवाड़े में हमारे महाराष्ट्र के प्रवर्तक आनंदकुल दिवाकर, महाश्रमण परम पूज्य श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. की जन्म जयंती मनाने का सौभाग्य हमें मिल रहा है। परम पूज्य कुन्दनऋषि म. सा. आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषि के सबसे ज्येष्ठ शिष्य रत्न हैं। उनकी छवि में हम आचार्य भगवंत को देखते हैं, उनको देखने से आचार्य भगवंत सामने आ जाते हैं। आचार्य भगवंत के प्रति असीम श्रद्धा, भक्ति एवं स्नेह रखने वाले हमारे सबके श्रद्धास्थान परम पूज्य श्री कुन्दनऋषि जी म. सा. को वंदन, नमन एवं अभिवादन! परम पूज्य प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म. सा., पू. श्री प्रशांतऋषि जी म.सा., पू. श्री आलोकऋषि जी म.सा., परम पूज्य श्री विनीतदर्शना जी म.सा एवं परम पूज्य श्री तिलकदर्शना जी म. सा. का चातुर्मास औंध नगरी पुणे, महाराष्ट्र में बड़े हर्षोल्लास के साथ धार्मिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक दृष्टि से ऐतिहासिक और चिर स्मरणीय हुआ। प्रवर्तकश्री जी ने आनंद नवकार परिवार, मिरी गौशाला तथा आनंद सेवा प्रतिष्ठान आदि संस्थाओं के माध्यम से प्रेरणा देकर शिक्षा एवं समाजसेवा के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी सरलता, विनम्रता, सादगी एवं सहिष्णुताओं को वंदन करते हुए हम उनके अच्छा स्वास्थ्य के लिए तथा दीर्घायु के लिए हमारी ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ प्रदान करते हैं।

एक दुःखद समाचार प्राप्त हुआ कि ज्येष्ठ समाज सेवी, भामाशाह, जैन समाज के गौरव अनेकों संस्थाओं का आधार स्तंभ, हजारों लोगों के तारणहार, अनेक धर्म स्थानों का निर्माण करने वाले, अनेकों अस्पताल के निर्माता, पुणे निवासी ज्येष्ठ उद्योगपति श्रीमान रसिकलालजी धारीवाल जैन का देवलोक गमन (स्वर्गवास) हो गया है। यह जैन समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। शिरूर नगरी का राजा कालवश हुआ है तथा केवल जैन समाज में ही नहीं बल्कि जैनेत्तर समाज ने भी अपना सहारा खोया है। माननीय रसिकलालजी धारीवाल जैन की आत्मा को सद्गति मिले, उनके परिवारजनों को, स्नेही तथा मित्र परिवार को इस दुःख की घड़ी को सहने की शक्ति प्रभु महावीर प्रदान करें। यही भावपूर्ण आदरांजली एवं श्रद्धांजली जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हमारे अध्यक्ष माननीय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन एवं सभी सदस्यों की ओर से हम अर्पित करते है।

इस पखवाड़े में प्रवर्तक पू. श्री कुन्दनऋषि जी म. जन्म जयंती 14 नवम्बर, युवाचार्य पू. श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर' स्मृति दिवस 15 नवम्बर, प्रवर्तक पू. श्री शांतिस्वरुप जी म. दीक्षा दिवस 19 नवम्बर, कर्नाटक गज केसरी पू. श्री गणेशीलाल जी म. दीक्षा दिवस 26 नवम्बर एवं उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. दीक्षा दिवस 26 नवम्बर को है। मैं सभी को और जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से सभी गुरु भगवंतों को हार्दिक अभिवंदन, नमन करता हूँ । ✧✧

अध्यक्षीय उद्गार

बेवजह के आडम्बर बंद हो जरुरतमंदों की सहायता में लगाएं धन और मन

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम्माननीय बन्धुओं, बहनों

सादर जय जिनेन्द्र!

नवंबर के प्रथम सप्ताह से चातुर्मास समापन होने जा रहे हैं। देशभर में जहाँ-जहाँ पर भी हमारे पूजनीय साधु-साध्वीवृंद के चातुर्मास हुए, सभी जगह से धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों की सूचनाएं प्राप्त हुई। मैंने भी स्वयं जहां पर भी संभव हो सका अत्यधिक समय निकालकर साधु-साध्वी जी महाराज के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का लाभ लिया। जहाँ पर मैं साधु-साध्वी जी महाराज के दर्शनों का लाभ नहीं ले पाया उनसे मैं हृदय की अनंत गहराई से क्षमा याचना करता हूँ।

मैं हमारे युवा साथियों, युवतियों व महिलाओं से आव्हान करना चाहता हूँ कि वे चातुर्मास समापन के समय पर हमारे पूजनीय साधु-साध्वी जी महाराज के विहार के समय अपना अत्यधिक समय निकालकर उनके साथ रहे। विहार में साधु-साध्वी जी महाराज को अकेला ने छोड़ें, एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने की जिम्मेदारी संभाले और उनके अच्छे स्वास्थ्य, गोचरी आदि का ख्याल रखें। किसी भी तरही की असुविधा के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय, प्रांतीय, क्षेत्रीय पदाधिकारीगण, कार्यकर्ताओं को सूचित करें। हम सदैव सहायता के लिए तत्पर और सजग हैं। हमें अपने पूजनीय साधु-साध्वी जी महाराज के वैय्यावच्च का ख्याल स्वयं रखना है। इसके लिए आप स्वयं भी जागरूक रहे और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। हमारी जागरूकता ही हमारे पूज्यवरों के लिए हमारी सेवा भावना का प्रतीक साबित होगी।

सर्दियाँ शुरु हो चुकी है और सर्दियों के प्रारंभ से ही हमारे देश में शादियों का सीजन भी शुरु हो जाता है। हमारे देश में शादियों पर सभी जन अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करते हैं और खुशियाँ मनाते हैं। जैन समाज में रात्रि भोजन और अनावश्यक धन के अपव्यय को व्यर्थ बताया गया है। इसीलिए मैं आपसे आव्हान करना चाहता हूँ कि आप शादियों में जमकर खुशियाँ मनाएं, मित्रों, परिवारीजनों को आमंत्रित कर खूब आनंद लें, परन्तु रात्रि भोजन और अनावश्यक खर्च से जितना हो सकें बचने का प्रयास करें। मेरा मानना है कि हम बेवजह के आडंबरों को आज जितना जल्दी बंद करने का प्रयास करेंगे, उतना ही जल्दी दूसरे भी हमसे प्रेरित होकर समता का प्रयास करेंगे।

अनावश्यक खर्च को दूर कर हमें जरुरतमंदों के की सहायता करने में अपना धन और मन लगाना चाहिए। ऐसा करने से आपके अंतरमन को आनंद की अनुभूति प्राप्त होगी और जरुरतमंद व्यक्ति, महिला एवं बच्चें आपको शुभकामनाएं देंगे। हमारा धर्म, हमारी पहचान अहिंसा और परोपकार करना ही हमें यह सीख देती हैं, ऐसी ही शुभ भावनाओं के साथ पुनः सादर जय जिनेन्द्र! ✧✧

जय सीमन्धर श्रमण संघ जयवंत हो जय महावीर

॥ जय आत्म ॥ ॥ जय आनन्द ॥ ॥ जय देवेन्द्र ॥ ॥ जय ज्ञान ॥ ॥ जय शिव ॥

आचार्य
शिवमुनि

59 वां दीक्षा जयंति मंगल अलंकरण

आत्मा से परमात्मा बनने के लिए है मनुष्य गति।

आत्मा के लिए है शरीर।

शरीर से जिन्होंने तप, सेवा, साधना कर आत्मशुद्धि की है,

जिन्होंने स्व-पर कल्याण के लिए जीवन धारण किया,

वे मानव जीवन पाकर जिन दीक्षा धारण करते हैं।

दीक्षा अर्थात् सार का ग्रहण, निस्सार का त्याग।

दीक्षा अर्थात् मन वचन काया के योगों को समभाव में स्थिर करना।

निरपेक्ष-भाव से महाव्रतों का पालन करना, दीक्षा है।

इस संसार से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं हो तो संयम में स्थिरता आती है।

दीक्षा आत्मा से परमात्मा बनने का सोपान है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की ओर से
शासन दीपिका प्रवचन प्रभाविका श्री मनोहर कंवर जी म.सा.
की 59 वर्षीय संयम जीवन यात्रा का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए
आपके द्वारा पोरवाल क्षेत्र में विशेष धर्म प्रभावना करने पर आपको

" पोरवाल चन्द्रिका "

के पद से अलंकृत करता हुँ।

सहमंगल मैत्री,

शिवाचार्य समवसरण, इन्दौर
दिनांक : 20.10.2017

शिवमुनि
(आचार्य शिवमुनि)

www.jainacharya.org
shivacharyaji@yahoo.co.in
09350111542

http://www.facebook.com/shivmuni
http://www.twitter.com/jainacharya
http://acharyashivmuni.blogspot.in/

http://www.youtube.com/jainacharyaji
JAINACHARYA

काम करो

– आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

भगवान ने मनुष्य को दो हाथ दिए हैं–काम करने के लिए।

जो आदमी काम नहीं करता, बिना कोई काम किए ही खाता-पीता है, वह चोरी करता है, अपनी धरती माता के साथ अन्याय करता है, समाज पर एक बोझ बनकर जीवित रहता है।

काम करना सम्मान की बात है। सच्ची आनन्दानुभूति की कुंजी है। पूरी मेंहनत से कमाकर खाई हुई रूखी रोटी भी अमृत के समान होती है।

और भूलिए नहीं, कोई काम असम्मानजनक नहीं होता। काम छोटा हो या बड़ा, ऊँचे पद पर आसीन होकर किया जाये अथवा नीचे पद पर, काम तो काम ही है। अतः छोटा से छोटा काम करने में भी हमें गौरव की अनुभूति ही होनी चाहिए।

एक नवयुवक विदेश से इंजीनियर बनकर आया। समाज में डाक्टर और इंजीनियर का पद बहुत ऊँचा पद माना जाता है। उस इंजीनियर युवक को अपनी योग्यता के कारण भारत लौटते ही एक बड़ी कम्पनी में प्रमुख इंजीनियर का पद मिल गया। नियुक्ति-स्थल पर उपस्थित होकर काम में जुट गया।

उस युवक का एक परम मित्र था। वह मित्र अपने विदेश से लौटे मित्र से मिलन के लिए बहुत आतुर था। उसने अपेक्षा की थी कि युवक इंजीनियर पहले उससे मिलने आएगा और उसके बाद ही अपनी नौकरी पर जाएगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ तो वह स्वयं ही उससे मिलने के लिए दिल्ली चला गया।

वह अपने मित्र के बंगले पर पहुँचा तो पता चला कि 'साहब' कारखाने का समय हो जाने से काम पर चले गए हैं।

कारखाने पहुँच कर वह 'इंजीनियर साहब' के ऑफिस में आया तो चपरासी ने बताया कि 'साहब' किसी मशीन के लिए पुर्जे को ठीक करने कारखाने के भीतर हैं। कह कर गए हैं कि उनका मित्र आए तो उसे वहीं ले आया जाये।

उस मित्र ने अब कारखाने के भीतर जाकर जो दृश्य देखा उस पर सहसा विश्वास नहीं हुआ। उसने देखा– इतना बड़ा इंजीनियर, इतना बड़ा साहब, एक मामूली मजदूर की तरह एक बड़ी मशीन के ऊपर चढ़ा हुआ, घुटनों के बल बैठें-बैठे मशीन के किसी पुर्जे को पेचकस से कस रहा था। उसके-धुले साहबी कपड़े तेल और कालिख से मैले हो गए थे। उसके चेहरे पर भी कालिख के दाग लग गए थे। किन्तु वे कालिख के दाग श्रम के मस्तक पर सिन्दूरी तिलक जैसे सुशोभित थे। उसके चेहरे पर अपने हाथों से काम करने की आनन्दाभूति छितरी हुई थी।

काम पूरा हो गया तो इंजीनियार नीचे उतर आया और प्रेमपूर्वक अपने मित्र से मिला। मित्र ने कहा–

'इतने लम्बे अन्तराल के पश्चात् तुमसे मिलकर चित्त प्रसन्न हो गया। किन्तु जो काम तुम कर रहे थे वह तो तुम किसी छोटे टैक्नीशियन को बताकर किसी मजदूर से भी करा सकते थे।'

यह सुनकर वह युवक इंजीनियर हँसते-हँसते बोला– 'अरे मित्र जो सन्तोष और आनन्द स्वयं अपने हाथ से काम करने में है वह दूसरों पर हुक्म चलाकर करा लेने में कहाँ धरा है।'

उस कर्मठ युवक का यह कथन बिल्कुल सत्य है।

काम कीजिए, और फिर देखिए कि कर्मरत रहने वाले व्यक्ति कितने सुखी होते हैं। ✧✧

कर्ता व भोगता कौन?

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म.

आत्मा अजन्मा है। आत्मा मृत्यु को भी प्राप्त नहीं करता है। जीवात्मा समस्त प्रकार के क्रियान्वन से पृथक है। यह अनादि है। जन्म शरीर का है। शरीर का सर्जन माँ और पिता की सर्जन शक्ति के आप में मिलने के बाद होता है। इस शरीर सर्जन के अंदर जो सतत् है, जो सत्य है, जो परमतत्व है जो शाश्वत् है, जो अनश्वर है, जो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख व अनन्त वीर्य के स्वभाव वाला है। अपने पूर्व कर्मों के कर्म पुद्गलों के अनुसार 84 लाख योनियों और चार गतियों में उसी प्रकार के कर्म पुद्गलों से निर्मित शरीर में अपना स्थान ग्रहण कर लेता है। इस परमतत्व जीवात्मा के संग अनादि काल से साथ लाये कर्म वर्गणा के पुद्गलों के माध्यम से ही शरीर के समस्त कार्य होते हैं। आत्मा न स्वयं कुछ करता है और न कभी कुछ कराता हैं, और न ही कुछ भोगता है जो कुछ भी घटिक हो रहा है। यह आत्मा उसको केवल जानता और देखता है उससे पूर्ण रूप से अलिप्त है। हाँलाकि जैन आगमों में लिखा है कि-

अप्पा कत्ता विकत्ता दुहानीय सुहानीय
अप्पा मित्तम अमित्तम च दुप्पठ्ठीय सुप्पठ्ठीय।।

इस गाथा के अनुसार ऐसा प्रकट है, कि आत्मा ही स्वयं कर्ता है और आत्मा ही भोगता है। आत्मा ही अपना मित्र है और आत्मा ही अपना स्वयं का शत्रु है। फिर शरीर का क्या मतलब की वह कुछ करें- शरीर तो जड़ है, शरीर तो नश्वर है, वह तो यही रह जाता है, फिर सुख और दुःख शरीर कैसे भोगता है?

आचार्य भगवन् पू. श्री शिवमुनि जी म. हमें ज्ञान कराते हुए स्पष्ट करते है कि- निश्चयनय से यह जीवात्मा न करता है न भोगता क्योंकि यह जीवात्मा तो सुख का भंडार है। इसका स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव है जो स्थायी और शाश्वत् है। इसके स्वभाव को परिवर्तित नहीं किया जो सकता हैं, परन्तु कर्म वर्गणा के पुद्गलों द्वारा आत्मा के स्वरूप को आच्छादित किया जाता रहा है। अतः वही पुद्गल जड़ होते हुए भी जड़ द्वारा अपनी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग द्वारा क्रियायें कराते हैं। कर्ता और भोगता मात्र शरीर है। सुख और दुःख शरीर के है आत्मा के नहीं। आत्मज्ञानी बताते है कि- आत्मा पर जब मिथ्यात्व का प्रभाव पड़ता है, तो वह आत्मा निज स्वभाव से विभाव दशा में चली जाती है और उस विभाव की दशा मात्र से ही इस शरीर के माध्यम से सुख और दुःख का अनुभव करती है तथा कर्त्ता और भोगता मानी जाती है।

व्यक्ति शरीर के तल पर ही जीता है। यदि वह शरीर के तल पर जीना छोड़कर आत्मा के तल पर जीना सीख जाये तो उसे ज्ञान हो जायेगा कि आत्मा बिल्कुल निर्लिप्त है। आत्मा केवल दृष्टा और ज्ञाता है।

हे आत्मन्! होश में आ। जाग! और अभी से स्वयं को जानने में लग जा क्योंकि आत्मासाक्षात्कार से ही समस्त प्रश्नों का समाधान है। ✧✧

प्रसन्नता कोई पहले से निर्मित वास्तु नहीं हैं, वो आपके कर्मों से आती है। जो स्वयं को हर परिस्थिति के अनुसार ढालना जानता है, उसे जीवन जीने की कला आ जाती है सत्य का सबसे बड़ा अभिनंदन यह है कि हम उस पर पूर्ण निष्ठा से चलें।

महामंत्र की महा-आराधना

गतांक से आगे ...

- पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म. 'शास्त्री'

मंदिर की प्रतिमा की तरह महामंत्र जी विराजमान होंगे तो सभी लोग स्थानकों में जाएंगे। सभी योग्य व्यक्ति स्वयं महामंत्र जी के सामने मत्था टेकें, यथाशक्ति जाप करें। ड्यूटी जाने से पहले या आने के बाद, दुकान जाने से पहले या सांयकाल जब बीबी बच्चों के साथ कुछ खाने पीने घूमने या टहलने के लिए निकलते हैं तो महामंत्र मन्दिर की तरफ स्थानक भवन आ जाएं। आम के आम गुठलियों के दाम। प्रासुक जगह पर टहलना हो जाएगा, नवकार मंत्र के दर्शन हो जाएंगे, स्थानक में पैर पड़ने से अंतर के भाव पवित्र हो जाएंगे तथा साधु-साध्वियों के अवसरानुसार दर्शन हो जायेंगे। इस तरह बच्चों में भावना बनेगी।

लोग गाँव में बनी मढ़ी, थान आदि पर मत्था टेकने मुंबई, सूरत और विदेशों से भी आते है, जबकि वहां श्रद्धा के नाम पर 4-6 टेढ़ी मेढ़ी ईंटें खड़ी होती हैं। लेकिन बुजुर्ग जाते थे, हमारी मान्यता है। जिन जवानों ने वहाँ कुछ नहीं देखा, फिर भी श्रद्धा से जाते हैं क्योंकि हमारी मत्था टेकने की परम्परा है। फिर क्यों नहीं, स्थानाकों के कमरे में जाप की चौकी की जगह स्थाई नवकार मन्दिर बना दिया जाए, वो केवल पर्युषणों में नहीं खुलेगा -अपितु प्रतिदिन समय पर खुले। प्रातः सूर्योदय से 10 बजे तक सांय सूर्यास्त से कुछ पूर्व खुलकर रात्रि नौ से दस तक कपाट खोले जाएं, फिर बंद कर दिए जाएं। इससे नवकार मन्दिर की गरिमा बनेगी। लोग समय पर आएंगे शीश झुकाएंगे, जाप करेंगे। निवेदन यदि योग्य लोगों किसी जगह गड़े ढूंढ को भी नमन करना प्रारंभ कर दें, तो वहां भी लोगों को आस्था के कारण धार्मिक वायब्रेशन, आध्यात्मिक शक्तियाँ पैदा जो जाएगी। जबकि नवकार मन्दिर में तो महामंत्र नवकार लिखा होगा जो मन के नहीविकारों को खत्म करके, मानसिक शांति प्रदान करेगा। देश की हर स्थानक में नवकार महामंत्र मन्दिर स्थापित हो ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है। जैन समाज बुद्धिजीवियों का वर्ग है, जरूर एक छोटे से संत की बात पर विचार करेंगे। जिन किन्हीं भी क्षेत्रों से कोई भी पूज्य मुनिराज, महासतियां जी विराजमान हैं, इस कार्य में सहयोग करेंगे तो समाज का बच्चा-बच्चा जैन स्थानक में पहुंच जाएगा।

नवकार मंदिर की स्थापना और वंदन नमन नित्य प्रति का बड़ौत शहर, पालम, नांगलोई, उत्तम नगर, शास्त्री पार्क, भागीरथी विहार, लक्ष्मी नगर, करौल बाग, त्रिनगर, अरिहंत नगर, पंजाबी बाग, सोनीपत सैक्टर-12 फाजिलपुर की जैन स्थानकों में प्रारंभ हो चुका। इसी चातुर्मास में करौल बाग समाज का महिला मंडल आया। सभी बहुत खुशी से कहते जो कमरा साल में आठ दिन खुलता था वो अब रोज खुलता है। लोग बहुत जाते हैं, नमन करने, जाप करने। शास्त्री पार्क वाले धर्मपाल जी कहते हैं कि हमार सारी महिलाएं मंदिर में जाती थीं, अब मंदिर जाने वाली भी स्थानक में बने नवकार मंदिर में मत्था टेकने आती हैं। यह आश्चर्य की बात है।

वीर नगर जैन स्थानक में महासंघ के महामंत्री प्रो. रतन जैन आए। मैंने उनके सामने बात रखी। अपनी भावना से उन्हें अवगत कराया, तो प्रो. साहब ने दीर्घ्र निःश्वास के साथ कहा कि महाराज जी नवकार मंदिर पर एक लेख लीखिए, मैं महावीर मिशन में उसे प्रकाशित करूंगा। प्रो. साहब के शब्द थे कि

'नवकार मंदिर की स्थापना का स्वपन सुन्दर है, इससे हमारे समाज को एक आलम्बन मिल जाएगा।' सभी लोगों के पैर धर्म स्थानक में पड़ेंगे, लेकिन सावधानी यह करनी पड़ेगी और व्यवस्था यह बनानी पड़ेगी कि यह मूर्तिपूजा का विकल्प न बन जाए और श्रद्धालु इस पर पैसा, चावल, सूखा नारियल, धागा या अन्य वस्तु चढ़ाना या यहां दीपक और अगरबत्ती इत्यादि जलाना शुरु न कर दें। मैंने उनसे कहा कि यह नियमावली बनवाई भी जा सकती है और इसकी पालना भी करवाई जा सकती है। मैं निश्चित तौर पर कहना चाहूंगा कि अगर अच्छी जगह जाएंगे तो अच्छे संस्कार पड़ेंगे और तो अच्छे दिन आएंगे। समाज का आध्यात्मिक क्षेत्र में किास होगा। पुनः हर समाज से निवेदन है कि स्थानक भवन में जाप के कमरे को नवकार मंदिर में तबदील करके आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता सुगम व प्रशस्त कर दें। महामंत्र की आराधना, जीवन की अनुपम साधना है। आओ मिलकर सफल बनाएं। ✧✧

।।रत्न कम्बल।।

भगवान महावीर के युग के समय की बात है। एक दिन राजगृह में रत्न, कम्बल बेचने वाले व्यापरी आए। उनके पास सोलह रत्न कम्बल थे। प्रत्येक का मूल्य सवा लाख स्वर्ण मुद्राएं थीं।

राजगृह का कोई भी व्यापारी उन्हें खरीद न सका। अंत में वे वहां के राजा श्रेणिक के पास गए। राजा को उनका मूल्य कुछ अधिक लगा। वे भी कम्बल न खरीद सके।

वहां पर गुजरते हुए राहगीरों ने निराश व्यापारियों को बताया कि इस राजगृह में शालीभद्र सेठ रहते हैं। वह अवश्य ही आपके कम्बल खरीद लेंगे। व्यापारी सेठ के पास पहुंचा। उसके निवास स्थान हवेली के ठाट-बाट, वैभव और उसकी चकाचौंध देख वह व्यपाारी विस्मित हो गया। वहां पर व्यापारी की भेंट भद्रा सेठानी हुई। उसने व्यापारी से वहां आने का प्रयोजन पूछा कि आपके पास कितने कम्बल हैं? उन्होंने बताया कि सोलह कम्बल हैं। भद्र सेठानी ने कहा कि मुझे तो 32 कम्बल चाहिए क्योंकि मेरी 32 बहुएं हैं।

भद्रा ने उस व्यापारी ने सभी 16 कम्बल खरीद लिए जब राजा श्रेणिक ने उन कम्बलों में से एक कम्बल लेना चाहा तो वह यह सुनकर हैरान रह गए कि उन कम्बलों को बहुओं ने पैर पोंछने का अंगोछा बना दिया है।

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देवें।

2. आपको जैन कॉन्फ्रेंस का आई-कार्ड नहीं मिला है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य देवें।

3. अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य देवें।

सम्पर्क करें : श्री विनय द्विवेदी

Ph. 011-23363729 E-mail : aissjc1906@gmail.com

- प्रधान सम्पादक

जैन का शरीर

- पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.

शरीर की अपनी भी भाषा होती है, जिसे बॉड़ी लेंग्वेज कहते हैं। शरीर की चंचलता या गम्भीरता से व्यक्ति की पहचान होती है। सारे अंग हमें मार्ग-दर्शन देते हैं। हमें आँखों का उपयोग कैसे करना है, पैर से चलना तो है मगर क्यों, कैसे ये सारी जैन के शरीर से शिक्षात्मक बातें हमें मिल जाती है:-

1. प्र. **जैन का शरीर क्या है?**
   उ. **एक विद्यालय**
2. प्र. **उसमें शिक्षक कौन है?**
   उ. **प्रत्येक अंगोपांग।**
3. प्र. **वे क्या सिखाते है?**
   उ. **मनुष्य बनने का पाठ।**
4. प्र. **हाथ क्या सिखाते हैं?**
   उ. **दान देने का पाठ।**
5. प्र. **पांव?**
   उ. **परोपकार का पाठ।**
6. प्र. **भुजा?**
   उ. **वीरता का पाठ।**
7. प्र. **छाती?**
   उ. **अभय बनने का पाइ।**
8. प्र. **हृदय?**
   उ. **धीरज रखने का पाठ।**
9. प्र. **जीभ?**
   उ. **सत्य का पाठ?**
10. प्र. **कान?**
    उ. **उपदेश सुनने का पाठ।**
11. प्र. **दिमाग?**
    उ. **गम्भीरता का पाठ।**
12. प्र. **सादगी?**
    उ. **सदाचार का पाठ।**
13. प्र. **नीची दृष्टि?**
    उ. **सब कार्य यतन से करने का पाठ।**

।।भगवान महावीर संदेश।

अहिंसा और मैत्री की आज दुनिया को जरुरत है और भगवान महावीर ने यही संदेश दुनिया को दिया था। आज धर्म में दिखावा और आडंबर अधिक आ गया है। अपना नाम गुप्त रखकर गरीबों और पीड़ितों की सेवा करें।

भगवान महावीर ने कहा था कि दूसरों को दुखी बनाकर कोई सुखी नहीं रह सकता। महावीर से बढ़कर इस जगत में कोई साधना नहीं है। इसमें असीम सुख, शांति और तृप्ति के साथ ही जीवन की ऊंचाइयों और गहराइयों को छूने की शक्ति है।

तीर्थंकर महावीर ने विश्व मैत्री का अनुपम सूत्र दिया है। नमक की भांति जियो जो सबका स्वाद बढ़ाता है, शकर की तरह घुल जाओ जो सबको मधुरता देती है और प्राण वायु यानि अह्क्सीजन की तरह जियो यानि सबको जीवन दो। यही भगवान महावीर का संदेश है।

महावीर सभी के लिए हैं। मनुष्य यदि आज मैं और मेरा- इन दो चीजों से अपने को मुक्त कर ले तो मोक्ष संभव है। बच्चों को हमेशा सुसंस्कार दें। जीवन में पहला स्थान माँ का, दूसरा पिता और तीसरा स्थान गुरु का होता है। त्याग जीवन को उन्नत बनाता है। विश्व की समस्याओं का एक ही समाधान है- भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांत का पालन करना। भगवान महावीर ने कहा था- मैं अपने भक्तों को ही अपनी परतंत्रता से मुक्ति देता हूं। इस स्वतंत्रता का अर्थ हमने बदल दिया। ✧✧

अध्यात्म के शिखर पुरुष गुरुदेव पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म.

- वरिष्ठ उपप्रवर्तिनी पू. श्री रविरश्मि म.

अध्यात्म के सुमेरु, वात्सल्य वारिधि, विश्व विद्युत श्रमण संघीय महामंत्री पू. गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' का जन्म गाँधी कुल में संवत् 1944 में मर्गीसर सुदि सप्तमी को श्राव रत्न श्री नाथुलाल जी के यहां धर्म परायणा आपकी माता नाथबाई जी की रत्न कुक्षि से आकोला नगर में हुआ। आपकी मातु श्री महासाध्वी श्री नाथ कुंवर जी व आत्मीय बहन श्री उगम कुंवर जी म. से संप्रेरणा प्राप्त कर आपने मेवाड संध शिरोमण मेवाड़ प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. के पावन सान्निध्य में संवत् 2006 माघ सुदि पूनम को कड़ियाा ग्राम में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। बाल्यकाल के निर्मल क्षणों में आपने जब से श्रमणत्व को स्वीकार किया तब से ही प्रतिपल जागरुक रहकर सद्गुरु के निर्दिष्ट अध्यात्म पथ पर अग्रसर होते रहे। परिणाम स्वरुप आपके ओजस्वी व्यक्तित्व एवं तेजस्वी कृतिव्य का कोई भी भाग अधूरा नहीं रहा। आपके लिये अधिकृत भाषा में कहा जा सकता है:-

अष्ट संपदा के भंडारी, गुण छत्तीस के धारक गुरुवर। जिन नहीं इस भूतल पर, लगते हो तुम सचमुच जिनवर। **भारतीय मनीषा के गौरव पुरुष:-** पू. श्री सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व है जिनकी विनम्रता, अनाशक्ति, गंभीरता, सहजता, सहिष्णुता, भोगवादी, सुविधावादी व उच्चश्रंखलतावादी मानव के लिये एक प्रबल चुनौति है। **अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वयकः-**गुरुदेव सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व हैं जिन्होंने कभी किसी के जाति, वर्ग प्रांत, संप्रदाय, रुपरंग वेशभूषा आर्थिक स्तर व सामाजिक प्रतिष्ठा को महत्व न देकर उनका मानवीय मूल्यों के स्तर पर मूल्यांकन किया।

स्थित प्रज्ञ:- सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व हैं जिन्हें पद व प्रतिष्ठा की कामना स्पर्शित न कर सकी। आर्चाय सम्राट श्री आनंद ऋषि जी म. ने चतुर्विध संघ की साक्षी से आपको श्रमण संघीय महामंत्री का उपाधि से अलंकृत कर अनन्य धन्यता का अनुभव किया। **शताब्दी के शिखर पुरुषः-** सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व है जिन के सबल कंधों पर श्रमण संघ जैसे विशाल ध र्म संघ का दायित्व है। जिसको यह कुशलता पूर्वक निवार्हित कर रहे हैं। वे संघ समाज व राष्ट्र के भाग्य विधाता हैं। देश की महान धरोहर है। जिन पर सबको सात्विक गर्म वे अनुपमेय हैं।

सूर्य से भी कुछ प्रखर तक आदमी जन्मा नहीं है।
सौभाग्य मुनि गुरुदेव जिनकी, एक भी उपमा नहीं है।।

सरस्वती पुत्रः- सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व हैं जिनके वक्तृत्व की भाषा संस्कृत निष्ठ के साथ-साथ दार्शनिक है। वे जो भी कुछ बोलते हैं वह गद्यात्मक व पद्यात्मक महत्वपूर्ण कृति बन जाती हैं उनके द्वारा जैनागमों का संपादन कार्य आज भी प्रगति पथ पर है। **लोक मंगल के विधायकः-** सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व हैं जिनकी संप्रेरणा है संचालित संस्थाओं में उनके अपरिग्रह के आदर्श अनुरुप गुरुभक्तों ने अर्थदान किया। जिसके कारण से वह साधना, चिकित्सा आदि के कई रचनात्मक प्रतिष्ठान प्रतिष्ठित हो सके हैं। **युग-सृष्टा युग दृष्टा:-** सौभाग्य मुनि वह व्यक्तित्व हैं जो ज्ञान और ध्यान संबंधी प्रयोगों का विश्वकोष हैं, वे शब्दातीत है। **सर्वाच्च समपर्ण के प्रतीकः-** गुरुदेव सौभाग्य मुनि उस व्यक्तित्व का नाम है जो अपने गुरुदेव की हर क्रान्ति के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने अपनी निमर्लल प्रतिमा

एवं अद्वितीय गुरुभक्ति से अपने गुरुदेव के गुरुतत्व को चमकाया है एवं शिष्यतत्व को ऐतिहासिक रुप में सफल किया है। सहस्त्रों वर्षों के इतिहास में किसी भी गुरु को ऐसा सक्षम सर्वात्मना समर्पित सुशिष्य मिलना अतीव दुर्लभ है। जिनकी पारदर्शिता में पूरा युग समाया है, ऐसे गुरुदेव के 81 वें जन्म दिवस पर हम उनका सच्चा अभिनंदन तभी कर पायेंगे यदि हम उनके पूरे अनुशासन में रहकर उनका मार्गदर्शन स्वीकार कर सकेंगे। शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना है कि गुरुदेव स्वस्थ्य रहकर युगों-युगों तक हमारा एवं समग्र मानवजाजि का मार्ग प्रशस्त करते रहें।

आप सलातमत रहो, क़यामत तक,
खुदा करे कभी क़यामत ही ना आये।।

गुरुवर के पावन चरणार्विन्दों में अपने समस्त आत्म प्रदेशों का भाव वंदन करती हुई अपनी गुरुभक्तों की ओर से अभिनंदन करती हूँ। ✧✧

।।उत्कृष्ट कला।।

अयोध्या नगरी में एक चमत्कारी यक्ष का मंदिर था। हर वर्ष बड़ा मेला लगता था, वहां की परंपरा के अनुसार हर वर्ष चित्रकारों द्वारा उस यक्ष का चित्र बनाया जाता था। लेकिन उत्सव समाप्त होते ही यक्ष अपने चित्रकार को मार डालता था। इसका परिणाम यह हुआ कि चित्रकार नगरी छोड़-छोड़कर भागने लगे। राजा को यह मालूम हुआ तो उसने सोचा कि इस तरह से सब चित्रकार भाग जाएंगे, फिर यक्ष को कौन चित्रित करेगा? राजा ने एक नियम बना दिया कि सबके नाम पतों पर लिखकर एक घड़े में डाल दिए जाते। एक-एक नाम निकला जाता। जिसका नाम निकलता, उसे यक्ष को चित्रित करना पड़ता। एक बार कौशाम्बी का एक चित्रकार अयोध्या आया और किसी चित्रकार के घर रहने लगा। यह चित्रकार अपनी वृद्धा मां का इकलौता बेटा था। संयोगवश इस वर्ष इस चित्रकार की बारी आई। वृद्धा को जब यह मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई।

कौशाम्बी के चित्रकार ने कहा - 'मां तुम क्यों रोती हो? यक्ष को चित्रित करने मैं जाऊंगा।' नवयुवक चित्रकार ने दो दिन का उपवास किया, नए-नए वस्त्र पहने, नए कलशों के जल से स्नान किया, नई तूलिकाएं लीं, नए रंग और नए पात्र लिए और वह यक्ष को चित्रित करने चल दिया। उस चित्रकार ने यक्ष को इतने भक्तिभाव से, अपनी संपूर्ण क्षमताओं का उपयोग करके चित्रित किया कि यक्ष का रूप पूरी तरह निखरकर सामने आ गया।

यक्ष ने प्रकट होकर चित्रकार के हुनर की प्रशंसा की और कहा - 'आज तक मेरा चित्र जिसने भी बनाया उसने मृत्यु के भय से उसे विक्रित कर दिया, इसलिये मैं आज तक अपना चित्र बनाने वाले प्रत्येक चित्रकार का वध करता आया हूं। तुम पहले चित्रकार हो जिसने मृत्यु के भय को त्यागकर अपनी उत्कृष्ट कला का नमूना प्रस्तुत किया है, तुमसे प्रसन्न होकर मैं तुम्हें तुम्हारा मुंह मांगा वर देने को तैयार हूं। यक्ष ने वर मांगने को कहा। चित्रकार ने भक्तिभाव से हाथ जोड़कर यक्ष से विनम्रतापूर्वक कहा - 'देव यदि आप मुझ पर प्रसन्न ही हैं तो आप चित्रकारों का वध करना बंद कर दें। यक्ष ने तथाअस्तु कहा और उसे वरदान दिया कि वह किसी के भी शरीर का एक अंग देखकर पूरा चित्र बना देगा। चित्रकार ने यक्ष के वरदान का सदुपयोग किया और उसने आगे चलकर अपनी चित्रकला और यक्ष से मिले वरदान से मान प्रतिष्ठा के साथ-साथ अपार धन अर्जित किया। साथ ही साथ उसने समाज के दबे कुचले लोगों का भी भरपूर साथ दिया। ✧✧

अंतर प्रकाश और जागृति

- साध्वी-रत्ना पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.

मानव जन्म मिलना, आर्य-कुल में उत्पन्न होना और धर्म श्रवण करना तीन अत्यन्त दुर्लभ संयोग बताए गए हैं, ये पुण्य और सत्कर्म से प्राप्त होते हैं। आत्मा संयम और तप रूपी अग्नि से जागृत होती है।

सर्प्र बिल में रहता है, हम वहाँ नहीं सोते हैं। हमें सर्प्र काटने का भय है, उससे भी अधिक उसके विष का भय है। सर्प्र में जहर न हो, तो शायद चिन्ता न हो। सर्प्रिणी अण्डे देती है, वह भी गोले में रखती है, बच्चा उस घेरे से बाहर निकल जाता है, वह बच जाता है। आत्मा की अवस्था वैसी ही है, जो आसक्ति से छलांग लगा लेती है, जन्म-मृत्यु से मुक्त हो जाती है।

एक श्रीमंत श्रेष्ठ थे, उनका लम्बा चौड़ा कारोबार था। उनसे राजा भी प्रसन्न था, वे राजदरबार की शोभा थे। समय के उतार-चढ़ाव से व्यापार की तेजी-मंदी में करोड़पति से रोड़पति हो गए। जिसने बहुत सुख-समृद्धि देखी हो, उसे दुःख भी असहाय लगता है। वे सोचने लगे, अब राजा के पास समाधान के लिये जाना चाहिए। राजा बहुत करुणामय था, उसने खजांची को बुलाया और आदेश दिया कि श्रीमंत सेठ के सामने खजाना खोल दे और वे जो चाहे, उन्हें ले जाने दें।

श्रीमंत सेठ ने राजा का खजाना देखा, रत्न माणिक्य, हीरे-पन्ने, मोती भरे पड़े थे। एक अच्छी सी मंजुषा उठा ली। राजा ने देखा कि श्रीमंत सेठ ने राज भंडार से बहुत कीमती रत्न उठा लिए है। वे धीरे से बोले - सेठ! इन सबकी आपको जरूरत लगेगी। इतना बड़ा न तो आपका करोबार था और न ही इतनी रकम की आपको जरूरत है।

सेठ ने प्रत्युत्तर में कहा - राजन्! आप बड़े भाग्यशाली है, खजाना धन-धान्य से परिपूर्ण है और यह धन राज खजाने से मैंने उदार लिया है, मैं जितना लेकर जा रहा हूँ, वापस मुझे ही चुकाना है। राजा ने उसे विदाई दी।

श्रीमंत सेठ राजा की जय-जयकार करता हुआ मन ही मन प्रसन्न हुआ और मंजुषा लेकर चल दिया। अब उनके मन में तृष्णा के सर्प्र दौड़ने लगे। वह सोचने लगा, इस राजा की नगरी में रहूँगा, तो कर्जदारों को सारा कर्ज चुकाना पड़ेगा। राज-खजाने से जितना धन लिया, वह भी वापस चुकाना पड़ेगा। अच्छा हो कि यहाँ से किसी दूर शहर में चला जाऊं और नया कारोबार नए नाम और फर्म से प्रारंभ कर लूँ, सारा जीवन आमोद-प्रमोद से बीतेगा।

श्रीमंत सेठ मंजुषा बगल में दबाकर रात के अंधेरे में निकल पड़ा। वह चलता ही गया। एक दिन बीतने के बाद संध्या में एक गांव के किनारे किसान की झौंपड़ी देखकर वहीं रुक गया। किसान ने खूब आतिथ्य सत्कार किया और रात्रि विश्राम के लिए सेठ से आग्रह किया। वह किसान का आग्रह देखकर झौंपड़ी के बाहर खटिया डाल कर सो गया। रत्नों की मंजुषा सिरहाने रखी थी, उसे उसकी चिन्ता में नींद नहीं आ रही थी। किसान के दो बैल झौंपड़ी के बाहर नजदीक ही बंधे थे, जहाँ कि सेठ सोया था। बैलों को जाति स्मरण ज्ञान हो गया था। वे आपस में बात करने लगे -

बुजुर्ग बैल कहने लगा- मेरा पूर्व जन्म का कर्ज उतर गया है, प्रातः होते ही मैं दूसरी योनी में

चला जाऊँगा। पूर्व भव में मैं, भी बहुत सम्पत्तिशाली था। बहुत पाप किया, मनुष्य भव बिगाड़ा, तिर्यंच योनी में जन्म लिया, खूंटे से अब तक बंधा रहा, इस किसान का खेत जोतते बूढ़ा हो गया। अब जाकर कर्ज से मुक्त हुआ।

इस किसान का ही कर्ज था, आखिर जन्म लेकर इसका ही बैल बना। सेठ चुपचाप सुन रहा था, वह बैलों की भाषा जानता था। अब दूसरा कनिष्ठ युवा बैल बोला - मेरे पूर्व जन्म का कर्ज पाँच हजार रुपया और रह गया है। इस नगरी के राजा ने आज के दिन ही बैल पूजा और बैलों की प्रतियोगिता रखी है, जिसमें प्रथम ईनाम पाँच हजार रुपये रखा गया है, इसी तरह द्वितीय ईनाम ढ़ाई हजार रुपये और तृतीय ईनाम एक हजार रुपये रखा है। मेरा मालिक किसान मुझे प्रतियोगिता में ले जाएगा। मैं, जीतूँगा और पाँच हजार रुपये का ईनाम मेरे मालिक को मिलेगा। मैं, इस तरह ईनाम जीतने पर इस किसान के कर्ज से मुक्त हो जाऊँगा।

किसान के दोनों बुजुर्ग और युवा बैलों की बात को सुनकर सेठ विचार करने लगा। इन बैलों की तरह श्रीमंत सेठ रहते हुए मैंने भी बहुत पाप किए। राजा ने मेरे कर्ज का भुगतान करने के लिए राजकोष खोल दिया; मैंने अरबों रुपये की धन सम्पदा उसमें से हीरे-मोती, पन्ने-जवाहर उठा कर यह मंजुषा अपने पास रख ली और इस पर संतुष्ट नहीं हुआ। अब देश छोड़कर ही आ गया और पाप करने चला। मेरा जो हितैषी बना, उसे ही धोखा देने चला। अब यह विचार आते ही वापस अपने नगर की ओर लौट आया। राजा के पास गया और धन देने लगा। राजा आश्चर्य करने लगा, यह सेठ कितना उदार और वचन का पक्का है! कल तो खजाने से रत्न-राशि लेकर गया और आज वापस चुकाने भी आ गया। राजा ने सेठ को सम्बोधित करते हुए कहा - श्रीमंत सेठ! तुम्हारा कर्ज चुक गया। कल तो लेकर गए थे, आज वापस राजकोष में जमा करांने आ गए।

श्रीमंत सेठ ने कहा - राजन्! मैं, बहुत दूर चला गया था, मैंने अपने सिर पर पाप की गठरी रख ली थी, मैं, कृतघ्न हो गया था। राजन्! आपने मेरे लिए सारा भंडार खोल दिया था, मैं आप के ही साथ विश्वासघात करने चला था, दो तिर्यंच प्राणियों अर्थात् बैलों ने मुझे रात के अंधेरे में ज्ञान का प्रकाश दे दिया। मैं, वापस अंधकार से प्रकाश की ओर लौट आया। मेरे भीतर सत्य और ज्ञान की ज्योति जागृत हो गई।

उसने धीरे से कहा - मैंने संपूर्ण जीवन छल किया। मैं, आपकी उदारता, निःश्छलता और करुणा को हीरे-पन्ने और चांदी के टुकड़ों से तौलकर देखने लगा। ✧✧

सादगी हो तो ऐसी

मुंशी प्रेमचंद अत्यंत सादगी पसंद थे। एक बार विद्या वाचस्पति जी ने उन्हें गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में आर्य भाषा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने स्वीकृति देते हुए लिख दिया कि वे अमुक ट्रेन से हरिद्वार पहुंचेंगे। निश्चित समय पर सम्मेलन की स्वागत समिति के सदस्य फूलमालाएं लेकर स्टेशन पर पहुंचे। लखनऊ की ट्रेन स्टेशन पर आई तो उन्हें प्रेमचंद नहीं मिले और वे वापस गुरुकुल लौट गए। वहां पहुंचे तो तभी उन्हें प्रेमचंद जी आते दिखाई दिए। विद्या वाचस्पति जी तुरन्त दौड़कर उनके पास गए, हाथ जोड़कर बाले - 'क्या लखनऊ की ट्रेन से नहीं आए?' उन्होंने उत्तर दिया - 'मैं तो उसी ट्रेन से आया हूं। मैंने कुछ लोगों को फूल-मालाएं लिए प्लेटफॉर्म पर देखा तो सोचा कि किसी बड़े आदमी को लेने आए होंगे। मैं चुपचाप प्लेटफॉर्म से बाहर आ पैदल चलते हुए यहां पहुंच गया।' वाचस्वति जी ऐसी सादगी के सामने नतमस्तक हो गए। ✧✧

पू. श्री प्रवेश कुमारी जी म. की 82वीं जन्म जयंती पर विशेष...

जिनके बचपन में ही प्रज्ञा का आलोक प्रकाशमान हुआ

- पू. श्री आरती ज्योति जी म.

आलस मां आयुष गया, दिन-दिन दोढा काम।
फाट्या रहेशे डाकला, पछि कदि भजशो भगवान्।।

जीवन के पल बीत रहे हैं, प्रमाद बढ़ता जा रहा है, तष्णा की पूर्ति कभी होती नहीं है, ऐसी स्थिति में आत्म शान्ति कैसे प्राप्त होगी? मात्र पाँच-छः वर्ष की आयु में इन प्रश्नों के समाधान प्राप्त करने की उत्कंठाओं ने जिन्हें उनके बाल्यपन में ही उस राह की ओर मोड़ दिया, जिस पर चलने के लिए अक्सर कहा जाता है कि व्यक्ति के विचारों में आध्यात्मिक व आत्मिक परिपक्वता का होना अनिवार्य है। मैं, यहाँ एक बात जोड़ना चाहूँगी कि विचारों में प्राकृतिक, स्वाभाविक व नैसर्गिक आत्मिक भावों का होना भी परम आवश्यक है। मेरा तात्पर्य है कि सांसारिकता के मध्य रहकर भी असारता का बोध होना, व्यक्ति को संस्कारों की थाह पर ही प्राप्त हो पाता है।

प्रसन्नी (श्री प्रवेश कुमारी जी म. का बचपन का नाम) समृद्धता पूर्ण जीवन जीने के उपरान्त भी अपनी **"ईरी मण्डी"** (बासी रोटी पर मक्खन लगा हुआ) खाकर ऐसे खुश हो जाती थी मानों उसके लिए इससे बढ़कर अच्छा कोई अन्य पदार्थ नहीं है। बचपन में ही सहिष्णुता, आत्म संतुष्टि, बाल सुलभ चंचलता का अभाव आदि जैसी प्रवष्त्तियों से युक्त आपका सम्पूर्ण जीवन यद्यपि मात्र 48 वर्ष का ही रहा लेकिन संयम पूर्ण 35 वर्षों में आपने श्रमणी संघ में अपना उच्चस्थ स्थान बनाया। अपनी माता शरबती देवी को सही मायनों में आत्म बोध देने और दीक्षा अंगीकार करने की प्रेरणा का श्रेय कहीं न कहीं आपको ही जाता है। यह भी सत्य है कि मात्र ढ़ाई वर्ष की अबोध आयु में आपके पिता के स्वर्गवास होने पर आपकी माता द्वारा आपको सांत्वनापूर्वक समझाए जाने पर आपने माता को ही संसार की असारता से परिचित करा दिया और प्रसन्नी के 5-6 वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते, उसने अपनी माता का प्रव्रज्या अंगीकार करने हेतु मार्ग भी प्रशस्त कर दिया। आपने अपनी माता, जोकि महासती पू. श्री सुभाषवती जी म. के नाम से विश्रुत हुईं, उनके सान्निध्य में स्वयं को साधना मार्ग पर चलने हेतु पारंगत किया, अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया, अपने आत्म ज्ञान को पुष्ट करने हेतु अनेक आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। 13 वर्ष की छोटी सी आयु में, रोहतक में, आपने पूज्य गणि श्री श्यामलाल जी म. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करते हुए महासती पू. श्री सुभाषवती जी म. का शिष्यत्व प्राप्त किया और श्री प्रवेश कुमारी जी म. के नाम से विश्रुत हुईं।

आपकी प्रज्ञा से प्रभावित होकर तत्कालीन समस्त प्रभावी संत-सतीवृंद ने एक स्वर से आपकी लब्धियों, श्रमणसंघ में सहयोग, संघ व समाज में कराए गए सेवा कार्यों हेतु प्रेरणाओं की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। आपकी शिष्याओं में तपाचार्या, तप सिद्धेश्वरी, उप-प्रवर्तिनी पू. श्री मोहनमाला जी म. जहाँ तप संसार में आपकी ख्याति को विश्व में आलोक प्रदान कर रही हैं वहीं महासती पू. श्री शान्तिदेवी जी म., महासती पू. श्री पवित्र ज्योति जी म., महासती पू. श्री मंजु ज्योति जी म. व महासती पू. श्री पूजा ज्योति जी म. भी आपके द्वारा दिखाए गए संयम मार्ग पर अनुशासित रुप से अग्रसर हैं।

10 अक्टूबर 1936 को हरियाणा के जिला करनाल में स्थित ग्राम इसराना के निवासी श्री मोहनलाल अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती शरबती देवी जी की पावन कुक्षि से जन्मी प्रसन्नी देवी के संयमी जीवन के ज्ञान आलोक से उपजा और संयम यात्रा की महत्ता को इंगित करता एक सत्य तथ्य विश्रुत है। आपने अपने महाप्रयाण की सूचना अपने संयमी जीवन के मात्र 7वें वर्ष में ही दे दी थी और अपनी ज्येष्ठ शिष्या पू. श्री मोहनमाला जी म. को कह दिया था कि – **"तू मेरे अंतिम समय में, मेरा संथारा कराएगी।"** यह घटना 28 वर्षों बाद अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। यह उनके संयम जीवन से जुड़े अनेक चमत्कारों में से एक विलक्षण एवं आश्चर्यचकित कर देने वाला प्रसंग है।

आपश्री जी के 82वें जन्मोत्सव के पुनीत प्रसंग पर अपनी दादी गुरुणी जी के संयमी जीवन के गुणों की, अपने संयमी जीवन में शतांश अभिलाषा के साथ हार्दिक बधाई एवं मंगल स्मरण सहित वन्दन-नमन-अभिवन्दन। ✧✧

लीला

एक बार एक बादशाह की बेगम बीमार पड़ गई। कई तरह के इलाज कराए, लेकिन कोई इलाज माफिक नहीं आ रहा था। अंत में एक बेहद पहुंचे हुए हकीम ने बताया कि – 'यदि अमुक-अमुक लक्षणों वाले आदमी का कलेजा कहीं से मिल जाए तो बीमारी से बचने की कुछ उम्मीद हो सकती है।' बादशाह को अपनी बेगम से बहुत मोहब्बत थी। वैसा आदमी खोजने के लिए मुनादी करवा दी गई। चारों तरफ राज सेवक दौड़ा दिए गए। बादशाह रोज उनसे पूछता, हिदायतें देता फटकार लगाता कि वैसा आदमी अब तक क्यों नहीं मिला।

आखिर राजा के कर्मचारी एक लड़के को ले ही आए। उसके गरीब मां-बाप ने कुछ धन के एवज में अपने लख्ते-जिगर को राज कर्मचारियों को सौंप दिया। काजी ने फतवा दिया कि – 'बादशाह की बेगम को बचाने के लिए किसी की जान लेना गुनाह नहीं है।' लड़का बादशाह के सामने खड़ा था। हकीम अपनी तैयारी करके बैठ गए। जल्लाद ने तलवार उठाई उस वक्त लड़का आसमान की तरफ देखकर हंस पड़ा। बादशाह ने इशारे से जल्लाद को रोका और लड़के से पूछा – 'लड़के! तू हंसा क्यों?' लड़का बोला – 'मां-बाप जो कि संतान की रक्षा के लिए अपने प्राण दे देते हैं उन्हीं ने मारे जाने के लिए बेच दिया। काजी जो न्यायमूर्ति कहलाता है, उसने एक बेकसूर की हत्या का फतवा दे दिया। बादशाह जो प्रजा का रक्षक है, अपनी निर्दोष प्रजा के एक बालक की हत्या करवा रहा है। इसी असहाय अवस्था में पहुंचकर मैं दीन-दुनिया के मालिक की ओर देखकर हंसा कि ऐ मेरे मालिक! इस संसार की लीला तो देख ली अब तेरी लीला देखनी है। जल्लाद की उठी हुई तलवार का तू क्या करेगा?'

मुझे माफ कर बेटा यह तलवार अब फिर नहीं उठेगी। बादशाह ने उससे क्षमा मांगी और उसे पर्याप्त धन-दौलत देकर वापस उसके मां-बाप के पास भिजवा दिया। – रमेश जैन (दिल्ली)

श्रमण संघ के कोहिनूर हीरे - गुरु जैन दिवाकर

- जैन दिवाकरीय साध्वी पू. श्री संयमलता जी म.

गुरुवर आपकी जीवन गाथा शब्दों की मोहताज नही, गुण गाऊँ में क्या-क्या आपके मेरे पास अल्फाज नही! केसर के लाल को मेरा प्रणाम, छह काया के प्रतिपाल को मेरा प्रणाम।

कहता है संसार जिसे जैन दिवाकर,
उस दिवाकर के चरणो में मेरा प्रणाम!

जैन इतिहास और भारतीय संत परंपरा में जैन दिवाकर पू. श्री चौथमलजी म. की यशोगाथा कालजयी है। उनका संपूर्ण जीवन प्रेरक घटनाओं, प्रभावशाली गतिविधियों, लब्धियो और उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। अहिंसा, जिवदया, शाकाहार, सदाचार, व्यसनमुक्ति और एकता के क्षेत्र में आपने युगांतरकारी कार्य किये। आपश्री का जन्म सं. 1934 कार्तिक शुक्ला 13 को नीमच के जिनधर्मोपासक श्रेष्ठी श्री गांगारामजी की धर्मपत्नी सौ.. केसरबाई के कुक्षी से हुआ। करीब 17 वर्ष की आयु में प्रतापगढ़ निवासी श्री पूनमचंदजी की सुपुत्री 'मानकुँवर' के साथ आपका विवाह हुआ। विवाह के पश्चात भी आपश्री संसारभावो से उदासीन ही रहे। माताजी यह सब कुछ जान गई। दोनो के बीच बहुत कुछ वार्तालाप हुआ। अंतः निष्कर्ष यही रहा पुत्र को पहले दीक्षा दिलाने हेतु माताजी तैयार हो गई।

स. 1952 फाल्गुन शुक्ल 3 पुष्य नक्षत्र के शुभ योग में आपश्री की दीक्षा पूज्य कविवर्य गुरुदेव श्री हीरालालजी म.के सान्निध्य में मध्य प्रदेश की पावन भूमि 'बोलिया' गाँव में हुई। आपकी धर्मपत्नी ने भी कुछ वर्षों के पश्चात दीक्षा स्वीकार की।आपकी माताजी ने भी दीक्षा ली। धीरे-धीरे आपश्री ज्ञान, ध्यान, तप,. संयम में अभिवर्धित होते रहे। अनेको प्रांतो में परिभ्रमण कर अपनी मधुर वक्तृत्व शैली से जन मानस को मोहित कर लिया था। तभी तो चतुर्विध श्रीसंघो ने समय-समय पर मुग्ध कंठ से प्रशंसा करते हुये आपश्री को 'जैन दिवाकर', 'जगत वल्लभ', 'प्रसिद्ध वक्ता' आदि पदवियों से विभूषित किया। आपश्री वक्ता के साथ तेजस्वी कवि भी थे। वाणी में अदभूत माधुर्य और आकर्षण था। प्रभावशाली देह, विद्धतायुक्त, ओजस्वी वाणी ने जादू किया। चरित्र-लवानिया और हजारों गीत गजलों के निर्माता रहे है। रामायण, महाभारत जैसे काव्य ग्रंथ तैयार कर समाज को अर्पित किये। स्थानकवासी और तेरापंथी मान्यता प्राप्त 32 आगमो के सारांश के रुप में आपश्री ने निग्रंथ प्रवचन की रचना की ।आपका सृजन नितांत मौलिक था। प्रखर मेघा तथा संकल्प शक्ति से आपश्री ने जैनआगमो के साथ श्वेतांबर - दिगंबरशास्त्र गीता, भागवत, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, कुरान आदि का सम्यक् प्रकारेण बोध प्राप्त कर लिया था। इतना ही नही संस्कृत, प्राकृत, उर्दू, फारसी, हिंदी, गुजराती, राजस्थानी, मालवी आदि अनेको भाषाओंके विज्ञ बन गये थे। इस व्यापक अध्ययन से दर्शनो एवं धर्मों के प्रति समत्व भाव बड़ा, स्वदर्शन पर दृढ़ आस्था जगी। आपश्री का व्यक्तित्व बड़ा अनूठा और बेजोड़ था। बड़े हिम्मतवान और साहसी संत थे, निडर और निर्भीक थे, सरल और सात्विक थे। आपश्री का निर्माण ही ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, सेवा, मैत्री और सौजन्य के अनंत अनंत उपादानों में हुआ था। आपश्री के व्यक्तित्व के गुणों की पहचान भी मैं कहा कर पाऊँगी? सेवा की बलवती उग्र भावना, करुणा का बहता हुआ उच्छल नीर्झर, साहस का शौर्यपूर्ण संजीव रुप, संकल्पित कार्यो को पूर्णता देने का व्रज उदघोष, व्यक्तित्व के हृदय को स्पर्श कर

प्रतिबोधित करने वाली अमोघ वाणी, ऐसा कौन सा उद्दात्त गुण है जो आपश्री के आलौकिक व्यक्तित्व में नही था? आपश्री में हृदय को मुग्ध कर देने वाली मृदुता और मधुरता भी थी तो पत्थर को पिघला देने वाली अमित संकल्पशीलता भी थी। मैं हाजारों व्यक्तित्व के इतिहास पड़ती हूँ और उसको गहराईओं से देखती हूं पर जो सर्वांग विलक्षण आपश्री में था, वैसा हजारों लाखों में नही मिला। सुखद आश्चर्य होता है, प्रकृति का भी क्या कमाल है। एक ही व्यक्तित्व में एरिन विलक्षणताए भर दी, जो चाहिये वह सब कुछ यही प्राप्त हो गया! आपश्री एक ऐसे समाजवादी थे जिसमे सूर्य की भाँति संयम की ऊष्मा, तेजस्विता और ज्ञान का प्रकाश दोनों ही थे। जैन एकता और सामाजिक संगठन के लिये उन्होंने न केवल उद्घोष किया, अपितु सक्रिय कदम भी उठाया और समाज को मार्गदर्शन भी दिया। वे त्यागी और निस्पृही थे, इसलिये वैभव चरणों में लोटता रहा। इस संदर्भ में जैन दिवाकर को जैन समाज के गांधी कहा जा सकता है। जैसे महात्मा गांधी कोई राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नही बने लेकिन उसका व्यक्तित्व-कृतित्व ऐसे पदों से कई गुनाह ऊपर है। अधिकारिक रुप जैन दिवाकरजी आचार्य, उपाध्याय जैसे पद भले ही आसीन नही हुये हो, लेकिन उनका व्यक्तित्व और प्रभावक कृतित्व कालजयी है। भारतीय राजनीति में जैसे गांधी युग हुआ, वैसे ही धार्मिक जगत में दिवाकर युग हुआ।

राजा, महाराजा, जागीरदारो, जमींदारों, नबाबों के महलों से लेकर कुटिया तक आपश्री ने अहिंसा धर्म का प्रचार-पसार किया था। आपकी वाणी से कही लोग लाभान्वित हुये। उपदेशों से जाती-पाती का भेद नही था। भक्त समुदाय एक वर्ग विहीन समता प्रभाव समाज का प्रतीक था। ओजस्वी तेजस्वी वाणी ऐसी थी कि उस जमाने में सैकडों स्थानों पर होने वाली बर्बर हिंसा-बलि बंद हो गई। मृत्युभोज, छुआछूत, जुआ, दहेज आदि अनेक बुराइयों की खिलाफ़त थी। जैन दिवाकरजी शाहाकार के प्रबल प्रचारक थे। उनकी मंगल प्रेरणा से कई राजा-महाराजाओं ने लाखों लोगों ने मांसाहार, शिकार, मदिरापान, सप्त-व्यसन का त्याग किया, हिंसा और जीव वध को छोड़कर दयामाता की शरण ली। हजारों ने सदाचारी और संस्कारी जीवन जीने का संकल्प लिया। अनेकों वेश्याओं ने उनके प्रवचन सुन कर अपना अभिशिप्त जीवन छोड़ दिया और सदाचार की रह अपना ली। इस तरह महान उपकारक पूज्य गुरुदेव श्री चौथमलजी म. को अहिंसा के अमर देवता के रुप में चतुर्विध संघ श्र्द्दार्चना करता है।

फूल तो नही रहा मगर सौरभ कायम है,
नाविक तो नही रहा मगर किनारा कायम है,
न भूलेंगे आपके अनंत उपकार को हम,
दीप तो नही रहा मगर ज्योति कायम है!!

वि.स.1996 में कोटा भूमि पर आपश्री ने दिगम्बर जैनाचार्य पू. श्री सूर्यसागरजी म., श्वेतांबर आचार्य पू. श्री आनंदसागरजी म.के साथ वर्षावास में प्रत्येक बुधवार को एक साथ प्रवचन व प्रेम व्यवहार करके त्रिवेणी संगम का पावन मेला लगा दिया था। आपके जीवन का अदभूत संयोग रहा की जन्म, दीक्षा, अंतिम प्रवचन और देवलोक गमन ये सभी घटनाएँ शुक्ल पक्षीय रविवार को ही हुई। संभवतः आप प्रथम जैन मुनि थे जिनके स्वर्गवास की खबर ऑल इंडिया रेडियो से प्रसारित हुई थी। आपका जीवन अनेक प्रकार के चमत्कारों भरा रहा जैसे चलती हुई रेलगाड़ी को रोकी, अफीम का गुड़ बनाया। सचमुच, जैन दिवाकरजी का जीवन शुक्ल यानि उज्जवल, धवल, आलोकमय तथा रवि भाँति तेजस्वी और ऊर्जस्विल था।वे आलोक के उपासक और आलोक के प्रसारक थे। अंत में यही कहूँगी वे ऐसे प्रज्वलित दीप थे जिससे ज्योति-ज्योति जल उठी थी। ऐसे ज्योति स्वरुप दिवाकर गुरुवर के चरणो में करबद्ध श्रद्धांजलि समर्पित है।

वास्तविक तीर्थ तो गुरु भगवंत और उनकी वाणियाँ हैं

– **अविनाश चोरडिया जैन,** राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

हुज्जतुल इस्लाम हुआ उसे न बातिनी समझा पाया, न जाहिरी। मैंने धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं की छानबीन की। कोई भी ऐसा बातिनी (आंतरिक ज्ञान को जानने वाला) नहीं था, जिससे मैं न मिला और जिससे मैंने उसके गूढ़ तत्वों को समझने की इच्छा न प्रकट की हो। कोई भी ऐसा जाहिरी (बाहरी) नहीं, जिससे मैंने उसकी आक्षरिकता (अक्षरशः पालन करने का आग्रह) के सार तत्वों को समझने का प्रयास न किया हो, कोई भी ऐसा मुतकल्लिम (तार्किक धर्म शास्त्रावेत्ता) नहीं जिसके तर्क और शास्त्रीय ज्ञान के उद्देश्य को समझने में मैंने अपना दिमाग न खपाया हो कोई भी ऐसा सूफी नहीं जिसके मत के रहस्योद्घाटन के लिए मैं न ललचाया होऊँ, कोई भी फकीर नहीं जिसकी फकीरी के मूल तक पहुँचने की चेष्टा न की हो, कोई भी जिंदीक (नास्तिक) नहीं जिसकी साहसपूर्ण नास्तिकता के कारणों को जानने के लिए हाथ-पांव न मारे हों। ऐसी थी मेरे हृदय की कभी न बुझने वाली ज्ञान पिपासा। और यह अन्तःप्रेरणा और सहजवृत्ति भी परमात्मा की ही दी हुई थी।'

'सत्य क्या है? जो हम देखते हैं क्या वही सत्य है? अथवा ये पूरा संसार ही छलनामय है जिसे हम सत्य समझ बैठे हैं? जब मेरे भीतर ऐसे सवाल उठते थे तो मुझे बेचैन कर देते थे और इतनी व्याकुलता होती थी कि सब कुछ छोड़-छाड़ कर भाग जाने की इच्छा होती थी। लेकिन इस पर काबू पाने के लिए जिस श्रद्धा रूपी प्रकाश की जरूरत थी, वह भी मुझे परमात्मा की ही कृपा से प्राप्त हुई।'

'अध्यात्म की उत्तरोत्तर ऊपर जाने वाली वाली मंजिलों को किताबी ज्ञान से नहीं समझा जा सकता। प्रेम के उदात्तता वाले सूफी दर्शन को तो और भी नहीं। वह साधना द्वारा ही प्राप्त होने की चीज है। सूफी साधना में यह कुछ विशेष अवस्थाओं द्वारा संभव हो सकता है- जैसे भावाविष्टावस्था में! हो सकता है उस अवस्था में किसी साधक को उस सत्य, उस परम ज्ञान या स्वयं उसे ईश्वर का कुछ आभास मिल जाए।'

वे किसी भी चीज को तर्क की कसौटी पर बिना कसे सहज ही मान लेने के लिए तैयार, सूखा ज्ञान और कोरा तर्क मन को शांति नहीं पुहुंचा सकते। दार्शनिक तत्वों की उन्होंने खुब छानबीन की लेकिन उन्हें लगा जैसे जिस चीज की खोज में वे हैं, वह उन्हें धार्मिक कर्मकांडों और ग्रंथों में गुरुओं की वाणी में मिल जाती है।

परमात्मा का भय इंसान के मन में सदैव बना रहता है और वह किसी तरह से भी इस बात को भूल नहीं पाते थे कि आने वाले जीवन में उन्हें क्या भुगतना पड़ेगा। उनके किन कर्मों के लिए परमात्मा उन्हें क्या दंड देगा? आदि आदि। **इसीलिए कहा गया है संतों (गुरुओं) की वाणी और बरसात का पानी हमेशा संजोय कर रखना चाहिए। चाहे अल्प (कम) मात्रा में मिले।** ✧✧

थोड़े से धन से दुष्ट जन उन्मत्त हो जाते है। जैसे छोटी, बरसाती नदी में थोड़ी सी वर्षा से बाढ़ आ जाती है।

परम आदरणीय आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

– शान्ति लाल नागौरी, उदयपुर (राजस्थान)

वीर भूमि मेवाड़ केवल वीरों एवं बांकुरों की जन्मभूमि ही नहीं रही अपितु भक्ति के क्षेत्र में भी इस पावन धरा का नाम आज भी दिगदिगुन्त हैं हर धर्म हर समाज में महापुरुषों की यह खन रही है। जैन धर्म के महान आचार्यों के रुप में आचार्य पू. श्री गणेशाचार्य, श्री नानेश एवं आचार्य पू. श्री देवेन्द्र जी म. सहित अनेक महान संतों ने इस धराधाम को पावन कृत्यों से पावन ही नहीं किया अपितु सदा-सदा के लिए ख्यात नाम दिया है। इसी क्रम में आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. जो श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर के रुप में ख्यात नाम है। अद्भुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी हैं। महापुरुष ऐसे ही नहीं बन जाते हैं। अनेक संघर्षों से अपने आपको रूबरू करते हुए इस पद पर पहुंच पाते हैं। आसान नहीं है यह डगर मंजिल कैसे मिलेगी।

'चलते रहो सदैव जगत में चलते रहो निरंतर। श्रम से जा थकता न कभी है पाता सिद्धि वही नरवर।।

इसीलिए नर से नारायण बनने के लिए सिद्ध स्वरुप पाने के लिए निरंतर जीवन को तपाते रहो, निश्चित रुप से मंजिल मिलेगी। ऐसे ही महापुरुष महान आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री ख्यात नाम उदयपुर मे वर्डिया परिवार में संवत १९८८ कार्तिक कृष्णा-१३ (धन त्रयोदशी को जन्म बालक का नाम धन्न अदभुत संयोग, धनतेरस धन्ना को धन्ना सेठ बना गई। सेठ वो नहीं जिसके पाय धन सम्पदा है, इससे भी बढ़कर ज्ञान, दर्शन चारित्र की वह सम्पदा जो किसी भाग्यशाली पुण्य आत्मा को मिलती है। वह धन्ना को प्राप्त हो गई एवं कालान्तर में वे आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि म. बन गए। लघुवय तीव्रबुद्धि बालक का गम्भीर सोच हो गया, सोया हुआ बालक गहन निद्रा अर्ध रात्रि के बाद का समय एक अद्धितीय स्वप्न एक मधुर आवाज 'उठो धन्ना और बालक की जागृत अवस्था देख भव्य आकृति मुख पर मुखवस्त्रिका, हाथ में रजोहरण और तत्काल ही वह दिव्य आकृति लुप्त हो गई। बालक ने सोचा क्या स्वप्न है? मैं प्रातःकाल स्थानक में जाकर महाराज श्री से पूछूंगा। सुबह बालक उठा और सीधा स्थानक में पहुंचा। 'आओ धन्ना' सामने देख वहीं मुखाकृति जो रात्रि स्वप्न में देखा था। अब क्या पूछता स्वतः ही जवाब मिल गया और बालक धन्न अपने आराध्य के चरणों में समर्पित हो गये।

वे थे उपाध्याय पू. श्री पुष्करमुनि जी म.। बालक के ज्ञान ध्यान सिखना प्रारंभ किया, कुशल बुद्धि पहले थे। मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में वि. स. 1997, 1मार्च, 1941 को श्री पुष्करमुनि जी म. के सान्निध्य में संयम अंगीकार कर लिया। धन्य है ऐसी मुमुक्षु आत्माएँ मात्र 9वर्ष की उम्र में खेलनें खाने की। एवन्ता मुनि की भी यही उम्र रही होगी। वे गणधर गौतम की अंगुली पकड़कर प्रभु महावीर के चरणों में पहुंच गये एवं धन्ना नींद में उठकर गुरु चरणों मं पहुंच गये, ऐसा ही प्रसंग आचार्यश्री नानेश की सुशिष्या महासतीवर्या श्री मनोहरकंवर जी म., महासतीवर्या श्री पानकंवर जी मत्र का उदयपुर का है। भक्ति एवं संयम में ऐसी रमी कि 108 पुण्य आत्माओं को इस पथ पर आरुढ़ किया। भक्ति का रंग तो ऐसा ही होता है। मुनि बनने के साथ ही जीवन निर्माण का मार्ग अनेक शास्त्रों का अध्ययन, अनेक भाषाओं का ज्ञान यथा चूर्णि, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, मराठी ऐसा ज्ञान जैसे ये भाषाएं आपको अधिकार स्वरूप मिली जो वास्तविक

जीवन की सफलता तो इसी में है। अनेक विषयों पर ऊंची साहित्यिक भाषा में तल स्पर्शी लेखन, आगम, उपनिषद, वेद, संस्कृत, व्याकरण, त्रिपटीक अनेक विषयों का गहन अध्ययन जो किसी कॉलेज में नहीं गये न किसी हाई प्रोफेशनल यूनिवरसीटी की डिग्री ही हासिल की। इन सबके बावजूद भी उच्च स्तरीय साहित्यिक ज्ञान मानो यह गुरु भक्ति का आर्शीवाद था।

सन 1992 को उदयपुर की इस पुण्य धरा पर हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में आपको आचार्य पद दिया। आचार्य पद संघ का सर्वोच्च पद अनेकों जिम्मेदारियों से भरा होता है जिसमें सभी को संतुष्ट नहीं रख सकते किन्तु आचार्य श्री जी इसके अपवाद रहे। सहज मुस्कान, सरलता, विद्या ददाति विनयम, विनयाद धाति पात्रताम् को उन्होंने अपने जीवन में सार्थक किया।अनेक ग्रंथों की रचना हर विषय पर उनका पूर्णाधिकार जैसी रचनाएं उनके अंतर्मानस में धन्ना सेठ की अकूत सम्पदा की तरह धरोहर के रुप में थी। जीवन के उषाकाल में उगते सूर्य की तरह स्वर्ण आभा लिए अंत तक चमकते रहे। गुरुभक्ति का अनूठा आदर्श अपने मन में लिये आचार्य बनने के बाद भी गुरु के प्रति वही समर्पण भाव जो उन्होंने उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी स्मरणाजंलि सभा में व्यक्त किए। 'गुरु भक्त सहज नहीं, क्या हम गुरु के प्रति श्रद्धावान हैं, क्या हम उनके बारे में जानते हैं? हम तो गुरु समर्पणा के बारे में ऐसे हैं जैसे व्यक्ति समुद्र या तालाब की सतह पर तैर रहे हैं। यदि हम जान जोखिम में ड़ालकर समुद्र के तट पर जाकर उसमें छिपे हीरे-मोती माणक को ला सकते हैं तो मानिये कि हम गुरु के भक्त हैं अन्यथा...

ऐसे परम गुरुभक्त जन-जन की आस्था के केन्द्र, विद्वान, मनीषी, साहित्यिक, ज्ञान, दर्शन के महाज्ञाता आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुन जी अप्रैल 1999 में मुंबई, घाटकोपर में सदा-सदा के लिए विलीन हो गए। उनकी 87वीं जन्म जयंती पर प्रभु जिनेश से प्रार्थना है कि वे जिस स्वरुप में हो सिद्ध, बुद्ध अवस्था का प्राप्त कर मोक्षगामी बने। ✧✧

उनका ही तो नाम है...

सौभाग्य सूर्य की प्रखर किरण वो, इतने दैदीप्यान थे,
दिव्य ध्वनी सी वाणी उनकी, सब करते रसपान थे।
रूप निराला धारे वो, जो सबसे महान थे,
त्याग तपस्या चतुर्थ युग सी, ऐसे चर्यावान थे।
जैस राजा के सिर पर मुकुट, रहता उसकी शान है,
जिनशासन के हीरे थे वो, हमको यह अभिमान है।
जिनके आर्शीवाद मात्र से, हम हो गए पुण्यवान है,
ऐसे मेरे उमेश गुरु को, वंदन शत शत बार है।
सारे जग में फैली जिनकी, अजब निराली शान है,
शबरी जैसे मेरे दिल में, बसने वाले वो राम है।
मेरे गुरुवर अणुमेश, उनका ही तो नाम है।
मेरे भगवन अणुमेश, उनका ही तो नाम है,
हम सबके अणुमेश गुरु, उनका ही तो नाम है।

धार्मिक व्यक्ति 'श्रावक' करुणाशील अभयदाता बनें

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर (राजस्थान)

भाग्यशालियो! उपासकदशांग आदि आगमों तथा अन्य शास्त्रों में जब श्रावक-जीवन की आचार-विचार एवं व्यहार संहिता को पढ़ता हूँ तथा आनंद, कामदेव आदि के चरित्र पढ़ता हूं तो मेरा रोम-रोम पुलकित हो जाता है। परंतु आज के श्रावक है। ये जिनाज्ञा के आराधक है या विराधक? श्रावक जीवन के आदर्श की तो बात ही क्या, हमारे में श्रावक जीवन की भूमिका भी तैयार हुई है या नहीं? इन विषयों के चिंतन में मन अटक जाता है। आज के अधिकतर श्रावकों की दशा ऐसी है:-

चवदें चूक्यो, बारह भूल्यो, नहीं जाणै छः काया रो नाम। गांव ढिंढोरा फेरियो, 'श्रावक' म्हारो नम।।

आज का श्रावक प्रतिदिन धारण करने योग्य चौदय नियमों को छोड़ चुका है। बारह अणुव्रतों को भूल चुका है और छः जीव नियमों का नाम भी नहीं जानता है न सामायिक, संवर,पौषध, माला, जप, तप, पूजा पाठ आदि नियमित करता है, तो भी पूरे गांव में अपने आपको ढिंढ़ोरा पीटकर 'श्रावक' जाहिर करता है। यह कैसी विषम दशा है? ऐसी विषमताओं को टाल कर यदि हम सच्चे व आदर्श श्रावक बन जायेंगे तो भी इस काल में हमारी बहुत बड़ी सफलता होगी।

उज्जैयनी नगरी में दण्डानायक किण्हा की भक्ति की जितनी कहानियां प्रसिद्ध थी उतनी ही उसकी कठोर प्रवृत्ति की बातें भी प्रसिद्ध थीं। किन्हा की इसी कठोरता के कारण उस राज्य में कोई चोर न था, कोई अत्याचारी न था क्योंकि चोर को मृत्युदण्ड जैसा कठोर दण्ड भी दण्डनायक किण्डा की सलाह से राजा भीमदेव दे देते है थे। उसी नगरी में एक जिनभक्त प्रसिद्ध चारण कवि अदिक भी रहता था। उसे किण्हा की यह कठोरता वैसे ही चुभती रहती थी, जैसे कि आँख में कोयले की किरकिरी। चारण ने किसी तरह से किण्हा की कठोरता का त्याग कराने के लिये एक योजना बनाई और एक बार जानबूझकर उसने एक ऊंट की चोरी की एवं दण्डाधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। राज्यसभा में जब उसे राजा के समक्ष पेश किया तो आरोपी, प्रत्यारोपी व साक्षियों की बात सुनकर राजा भीमदेव ने आज्ञा दे दी कि अरोपी को ऊंट की चोरी करने के फलस्वरूप मृत्यदण्ड दिया जाए। मृत्युदण्ड का उल्लेख सुनकर भी चारण आदि कुछ न बोला। मृत्युदण्ड का नियत दिन आया। शूली पर ले जाने से पहले राजा ने चारण अदिक से अंतिम इच्छा पुछवायी।

चारण बोला! महाराज! मुझे दण्डनायक किण्हा से मिलवा दिया जाये, मैं उनसे एक बात कहना चाहूता हूँ। राजा ने तुरंत उसकी इस अच्छा की पूर्ति के लिये उसे एक अधिकारी के साथ दण्डानायक किण्हा के पास भेज दिया। किण्हा उस समय स्नानादि कर पूजा के शुद्ध धवल वस्त्र पहन, हाथ में फल-फूल, नैवेद्य, धूप, दीप, अक्षत से सजी थाली लेकिर मन्दिर की ओर जा रहे थे। परंतु राजा द्वारा भेजे गए विशिश्ठ दूत के साथ आए उस चारण को देखकर किण्हा रुक गए। उन्होंने उनके आने का कारण पूछा। चारण ने अपनी कथा सुना थी एवं मृत्यु दण्ड से क्षमायाचना की प्रार्थना की। किण्हा ने उसकी बात सुन पूजा के वस्त्रों के मृत्युदण्ड के लिए मुंह से कहना उचित समझा, अतः थाली में से एक फूल को अधिकारी को दिखाते हुए उसका डंठल तोड दिया। यह किण्हा की ओर से भी मृत्यु दण्ड के समर्थन का सूचक था। **(क्रमश ...)**

साहित्य-मनीषी श्रमण का बिछोह

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

श्रद्धेय डॉ. अमरेशमुनिजी 'निराला' स्वयं लिखने-रचने वाले साहित्यकार सन्तों में से थे। वे सृजनात्मक साहित्य के अनुरागी, पारखी तथा चिन्तनशील रचनाकार थे। उन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों और जीवन-मूल्यों को अपनी हिन्दी गद्य-पद्य की रचनाओं में बेबाकी से पिरोया और संजोया। साहित्य में घालमेल करना एवं मौलिकता से समझौता करना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था। वे जिन किताबों और लेखकों को पसन्द करते, उनका मुक्त मन से जिक्र करते थे। मेरी रचनाओं पर वे मुग्ध होते और कहीं-कहीं समीक्षात्मक राय देते। उनकी रचनाओं पर भी मेरे अभिमत को महत्त्व देते। एक बार उन्होंने कहा कि समाज में ऐसे मनीषी अल्प हैं, जिनके साथ गंभीर साहित्यिक-विमर्श किया जा सके। मैंने कहा कि हैं, लेकिन धार्मिक समाज में उनका यथेष्ठ मूल्यांकन नहीं है। पद-प्रतिष्ठा की होड़ और भक्तों की भीड़ में ईमानदार साहित्यकार को देखना-परखना मुश्किल हो जाता है। मैंने उनसे समाज में व्यापक स्वस्थ साहित्यिक वातावरण निर्मित करने का निवेदन भी किया।

समय बहुत तेजी से गुजरता है। उनकी साधना और सृजन-यात्रा में उस वक्त ठहराव-सा आया, जब पता चला कि वे संघातिक बीमारी से पीड़ित हैं। कार्तिक कृष्ण नवमी, वि. सं. 2074 (13-10-2017) को उनकी यह जीवन-यात्रा सदा-सदा के लिए ठहर गई। वे उनके साहित्य में सदैव जीवित रहेंगे। उनकी कृतियों में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत होने योग्य साहित्य भी है। साहित्यिक संगोष्ठियों में विमर्श योग्य साहित्य भी है। ऐसा विमर्श करके उनकी सच्ची श्रद्धार्चना की जा सकती है। ऐसा विमर्श पूज्य मरुधर केसरीजी के साहित्य तथा उस समस्त श्रुत-सम्पदा पर भी किया जा सकता है, जो अलमारियों में बन्द है।

आज प्रकाशन तो खूब हो रहा है, लेकिन नवसृजन, अनुशीलन और अनुसंधान नहीं के बराबर है। गुणवत्ता पर ध्यान नहीं है। समाज अपने अनर्थदण्ड पर अंकुश लगाए तो कुछ सार्थक किया जा सकता है। मुनिश्री की पुनीत स्मृति में ऐसा कुछ हो तो अच्छा है। भावपूर्ण प्रणति के साथ उन्हें हार्दिक श्रद्धा-सुमन!

✧✧

सत्य गया पाताल में

संत कबीर जुलाहा थे। वे कपड़ा बुनने का कार्य किया करते थे। एक दिन उन्होंने एक पगड़ी बनाई। उसका मूल्य उन्होंने अपना परिश्रम लगाकर पांच टके रखा। वे पगड़ी लेकर बाजार गए। ग्राहकों को उसका मूल्य पांच टके बताकर बेचने लगे। पर कोई भी ग्राहक तीन टके से ज्यादा खरीदने में राजी नहीं हुआ। कबीर जी खाली हाथ शाम को पगड़ी लेकर वापस घर लौट आए। कबीर की पुत्री कमाती को जब यह पता लगाा कि लागत लगी पगड़ी पांच टके में न बिक सकी, तो वह स्वयं उस पगड़ी को बेचने के लिए बाजार में गई। वह पगड़ी को सात टके बता कर बेचने लगी। उसने वह पगड़ी सात टके में बेच भी दी। जब वह पगड़ी बेचकर घर आई तो उसने सात टके की बात बतााई। इस पर कबीर बोले।

सत्य गया पाताल में, झूठ रहा जग छाय।
पांच टके की पगड़ी, सात टके में जाए।।

आध्यात्मिक साधना कैसे करें?

- अशोक खिंवसरा कोठारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

सवेरे कितने बजे उठना:- Early to Bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise.

सवेरे जल्दी उठने के संबंध में उक्त कथन के अनुरुप ही गुजराती में भी एक कहावत है:-

राते बहेला जो सूवे, बहेला उठे वीर,
तन बुद्धि धन बहुत बधे, सुख मां रहे शरीर।।

साधक को ब्रह्ममुहुर्त में अवश्य जग जाना चाहिए, ऐसा शास्त्रों का मंतव्य है। जप ध्यान आदि के लिए ब्रह्ममुहुर्त उत्तम समय है। इस समय मन शुभ ध्यान की ओर आकर्षित हो सकता है क्योंकि वातावरण बहुत ही पवित्र एवं शांत होता है।

कितने जापः- आत्म ज्ञान के लिए जाप सहज और प्राथमिक उपाय है। जाप का अंतिम परिणाम समाधि है। हर साधक को एक मणिकाओं की माला रखनी चाहिए प्रतिदिन कम से कम 108 बार नमस्कार महामंत्र का जाप करना चाहिए। माला एक चाबुक है। वाचक जाप की अपेक्षा मानमिक जाप अनंतगुणा फल प्रदान करता है। प्रभु स्मरण से अल्पज्ञ भ्री महान बन जाता है। शरीर से ममत्व कम होकर वितराग प्रभु के प्रति एककपता अनुभव करने लगता है। शुद्ध भाव, प्रेम और दिव्य भक्ति से प्रभु स्मरण करना चाहिए। आँखें मूँद कर अपने आराध्य का ध्यान करे।

कितने समय मौन रखना: प्रतिदिन कम से कम दो घंटा मौन रखना चाहिए। मौनावस्थ में उच्च्य विचारों से स्वाध्याय, ध्यानादि करें। मुंह से शब्द बाहर आने पर उसकी बहुत सी शक्ति क्षीण हो जाती है। अतः प्रत्येक साधक को अपने आराध्य का स्मरण मौनयुक्त करना चाहिए। इसलिए अंतर की मूक आशीष का मूल्य बहुत आंका गया है। मौन, अल्प-उपधिक और आत्मनिरीक्षण ये तीनों ऊर्ध्व गति के मार्ग हैं।

शास्त्रों का वचन कितने समय करना:- गुरुमुख से शास्त्रों का रहस्य को समझने का यत्न करना ज्ञान प्राप्ति का प्रथम उपाय है। ऐसा अवसर न हो तो, उपदेश माला, उपमिति भव प्रपंच कथा, योग शास्त्र? उत्त्राध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, नंदीसूत्र, श्राद्ध विधि, धर्मसंग्रह, बारह भावनाओं आदि शास्त्रों के स्वाध्याय, वाचन, चिंतन आदि के इतस्तत भटकता मन स्थिर होता है, आत्म ज्ञान प्रकट होता है। एक प्रकार की समाधि और ध्यांन है।

कौन सी इन्द्रियाँ अधिक बलवान है?:- सभी इन्द्रियां बलवान हैं। प्रत्येक इन्द्रियों पर कड़ी निगरानी रखो। इन्हें जीतने के लिए उपवास, त्याग श्रम दम आदि उपायों का प्रयोग करे। इन्द्रियाँ मन की सहायता से ही उत्तेजित होती हैं। अतः अशुभ संकल्प-विकल्पों का त्याग करो या मन को शुभ संकल्पों में जोड़ने का प्रयास करो। मौन से मन तथा इन्द्रियां निर्बल होती हैं और अंत में जीती जा सकती है। मनो जय से इन्द्रियाँ जय की जा सकती है। इन्द्रि मन को जीतने हेतु मौनाभ्यास करना चाहिए। ✧✧

।।भगवान महावीर संदेश।।

1. अहिंसा और मैत्री की आज दुनिया को जरुरत है और भगवान महावीर ने यही संदेश दुनिया को दिया था। आज धर्म में दिखावा और आडंबर अधिक आ गया है। अपना नाम गुप्त रखकर गरीबों और पीड़ितों की सेवा करें।

अमृत तुल्य पेय-जल का आविष्कार

- **डॉ. जीवराज जैन,** जयपुर (राजस्थान)

सरकार के ISM धनबाद प्रतिष्ठान ने कोलकाता, रांची, जमशेदपुर, धनबाद और रामगढ़ पांच शहरों के पेय जल की एक टेस्ट रिपोर्ट में बताया कि उसमें क्लोरोफर्हम की मात्रा 0.5 mg प्रति लीटर पाई गयी है। यह अमेरिकी पर्यावरण मानकों की उच्चतम सीमा 0.08mg से यह बहुत ज्यादा है।

यह तेजाब- गुण वाला जल होता है तथा एक प्रकार के कैंसर हो जाने की संभावना को बढ़ा देता है। इसमें मुक्त ऑक्सीजन मूलक भी पाए जाते हैं, जो ऊतक और हड्डी क्षरण की एक दीर्घकालिक समस्या भी प्रस्तुत करते हैं। इसीलिए भारत में, पैक-पानी के उद्योग फल फूल रहे हैं। हालांकि, यह उद्योग प्लास्टिक की बोतलों के कचरे को निपटाने की एक बहुत बड़ी समस्या पैदा कर रहा है।

2. जापान और अमेरिका में इस विषय पर बहुत अनुसंधान हुए हैं। उसके मुताबिक यदि पेय जल को क्षार गुण वाला बना दिया जाए, तो उपरोक्त कैंसर का खतरा तो टलेगा ही, साथ साथ में हड्डियों का क्षरण भी रुक जाएगा तथा एसिडिटी की समस्या कम हो जायेगी। वह मूत्र की pH को बढ़ा देता है, जिससे मेटाबोलिक सिंड्रोम होने के खतरे को कम कर देता है। किडनी पर दबाव को कम कर देता है। इसके अलावा स्वास्थ्य संबंधित और भी फायदे इंटरनेट पर बताये गए है।

3. **भस्मी-जलः** एक निर्धारित मात्रा में गोबर भस्म को पीने के जल में घोलने से जो कोलोइड बनता है, वह पानी के प्राणों का घात कर उसे निर्जीव बना सकता है। इस कोलोइड में जल-जीव की जालीनुमा योनि शरीर पर भस्म के सूक्ष्म कण बैठकर, उसके छिद्रों को बंद कर देते हैं। इसमें उपलब्ध ऑक्सीजन के स्वतंत्र मूलक भी फिर से आपस में मिलकर, ऑक्सीजन को अणुरुप में बदल देते हैं। जिससे उसका OR पोटेंशियल भी ऋणात्मक हो जाता है।

   I0 लीटर पेय-जल में 50g गोबर की भस्म (100 meh), यानी I0 चाय के चम्मच जितनी, घोलने से जो कोलॉइड बनता है, उसको 30 मिनट तक स्थिर रखने के बाद निथार कर कपड़े (लॉन) से छान लिया जाता है। इस वैज्ञानिक अभिक्रिया से जो गुण संवंर्द्धित जल प्राप्त होता है, उसे भस्मी-जल कहते हैं। वो आज के समाज के लिए यह एक अतिगुणकारी अमृततुल्य पेय -जल होता है। यह हमेशा क्षार गुण वाला होता है (pH द्रव्यांक 8से अधिक)। इस वैज्ञानिक तकनीक में हमेशा गोबर की भस्म का उपयोग करना है। कारखानों की फ्लाई-भस्म से बिल्कुल परहेज करना है।

3. प्रयोगों से पता चला है कि जैन समाज द्धारा काम में लिया जाने वाला धोवन पानी भी हमेशा क्षार गुण वाला ही होता है। अतः उसे पीने से उनको उपरोक्त फायदे स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

4. **भस्मी-जल** पर किये गए आगे के उच्च्व तकनीकि प्रयोगों से पता चला है कि उसका आभा-मंडल बिलकुल बदल जाता है। पूर्व में वैज्ञानिक प्रयोगों द्धारा यह सिद्ध कर दिया था कि जल भी एक प्रकार का सचेतन जीव होता है (अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका में वर्ष 2014 में प्रकाशित)।

   इस आविष्कार के अनुसार भस्मी-जल का औरा निर्जीव जल का औरा होता है। बाद के प्रयोगों से

पता चला है कि करीब 20 घंटे तक इसमें अमृत तुल्य गुण बने रहते हैं।

5. भस्मी-जल पीने के फायदे -जल को सम्मान चूँकि हर परिवार के लिए पेय-जल से भस्मी जल बनाना अति सरल है, अतः मध्यम और निचले वर्ग के लिए इस तकनीक को अपनाना बहुत आसान होगा। दिनभर की आवश्यकतानुसार प्रतिदिन सुबह भस्मी जल बनाने में परिवार का श्रम जुड़ जाने के कारण उनका पानी के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण बन जाएगा। इससे फिजूलखर्ची तो मिटेगी ही, साथ-साथ में पानी की आवश्यकता को कम करने की दिशा में हर व्यक्ति का सहयोग बढेगा। इस मुहिम से पर्यावरण-संरक्षण और जल का सदुपयोग बढेगा। व्यक्ति की औसत दैनिक जरुरत 50% तक कम करने के लिए ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी।

घरों में भस्मीजल बनाकर, उपयोग लेने में कोई अतिरिक्त निवेश की भी जरुरत नहीं पड़ती है। चूँकि यह सरल और कम खर्चीली तकनीक है, गाँवों में आसानी से स्वीकार्य हो जाती है। भस्म भी गाँवों में आसानी से मिल जाती है।

'आधुनिक युग में उन्नत पेय जल बनाने का एक सरल और वैज्ञानिक तरीका विकसित हो गया है, जो आज की जीवन शैली में अवाँछनीय गन्दगी' और अनिश्चितता से छुटकारा दिलाता है।

अतः जन-स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से सरकार इसको प्रचारित करके, गाँव-गाँव में स्वच्छ जल मुहैया कराने का अपनावादा पूरा करने में सफल हो सकती है। भारत सरकार ने इस आविष्कार को गंभीरता से लेते हुए, इस तकनीक को, वैज्ञानिकों की एक कमिटी (R.A. Mashelkar Committee) के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया था। वर्ष 2017 में इसे सफलता पूर्वक करदिया गया है।

यह विभूति से उपचारित पानी ज्यादा शुद्ध और पीने लायक पाया गया। उपर्युक्रम वर्णित अन्य फायदों के अलावा अमृत तुल्य भस्मी जल का बराबर उपयोग, चयापचय-संलक्षण अनियमितताओं की संख्या को कम करने में मदद करेगा। ✧✧

वसुधा है हमारा घर ...

'वसुधा' शब्द पर गौर करें तो एक अर्थ में वसु+धा यानि जिसे अपने 'फण' पर किसी अज्ञात नाग ने धारण किया है और दूसरा 'व + 'सुधा' यानि वह बस्ती, वह जगह जहाँ सुधा, अमृत ही अमृत विद्यमान है। दोनों अर्थो में ज्यादा प्रभावी, ज्यादा ग्राह्य दूसरा अर्थ है क्योंकि वसुधा यानि धरती ही हमारा घर है और इस घर में सिर्फ हम ही रहते हो ऐसा भी नहीं है। समाज-शास्त्रियो, प्रागैतिहासकारो का मत है कि मनुष्य ने निरंतर विकास किया है। सदियों से वह क्रूरता, बर्बरता और अपने खुरदुरेपन को स्निग्ध करता चला आ रहा है।

समाज शास्त्री यह भी मानते हैं कि अहिंसा या करुणा या दया की अनुभूति उतनी ही प्राचीन है जितनी आज तक बह रही नदियाँ, ये पहाड़, ये सघन वन, ये घाटियाँ, ये झरने, ये मैदान तलहटियाँ और मुनष्य के दांतों की बनावट और उनकी प्रथम तह जो इस तथ्य की गवाह है कि मनुष्य में अहिंसा की आस्था का अमृत सदा से था और यही विचार वसुधा को 'हमारा-घर' कहलाने योग्य बनाता है। अब यह हमारा दायित्व है कि हम अपनी अहिंसाधर्मिता से इस धरती को रहने योग्य घर बनाए रखें। ✧✧

विहार मार्ग दर्शिका : एक सार्थक प्रयास

– आर.सी. कटारिया, रतलाम (मध्य प्रदेश)

साधु भगवंतों को अपने विहार यात्रा में आने वाली अनेक अड़चनों के कारण कई अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। गंतव्य के नए क्षेत्रों में विहार करने हेतु उन्हें मार्गो-स्थानों की पर्याप्त रुप से जानकारी के अभाव में जोखम झेलने की संभावनों से इंकार नहीं किया जा सकता। सह धर्मी श्रावकों की जानकारी असाधता भी पीड़ा दायक स्थिति का निर्माण करता है। साधु-साध्वीवृंद की पैदल विहार साताकारी हो तथा अनावश्यक कष्टों और तनाव से वे बच सके इसके लिए अहमदनगर जिला (महाराष्ट्र) में विहार यात्रा के लिए सुश्राव भाई श्री विजय कुमार शांतिलाल जी गुंदेचा की सकल्पना सहयोग श्रम से विहार मार्ग दर्शिका का प्रकाशन किया गया। वह सराहनीय है। जैन संतों के पैदल विहार यात्रा के संबंध में जैन प्रकाश के जनू प्रथम अंक में भाई सुमेर सिंह जी मुणोत ने अपने आलेख में जैन संतों का पैदल विहार के विषय में गंभीर संबंधित मुद्दों को धर्माचार्य, चतुर्विध संघ व जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारयों के समक्ष विचारार्थ रखा है। परिवर्तन की सुदृ व्यवस्था तथा वैकल्पिक अन्य क्या बदलाव संतों के पैदल विहार में हो सकता है। विचारार्थ प्रस्तुत किया है जिस पर विचारकर निर्णय लेना जरुरी हो गया है, जिससे जैन साधु-साध्वियों के विहार दौरपन सड़क दुर्घटनाओं को रेका जा सकता है।

विहार यात्रा बाबत कुछ अर्से पहले हमारे श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्यारचंद जी म. ने साधु-साध्वी के विहार प्रयोजनार्थ एक पथ निर्देशिका बनाई थी, जिसमें विहार मार्ग और उनके सम्पर्क से जुड़े कस्बों, गांवों का नक्शें के साथ वहां के स्वधर्मी भाईयों के घरों की संख्या सहित विवरण दिया था वर्तमान के संदर्भ में उसका फिर से रिविजन किया जा सकता है।

सन 1915 में इंदौर (मध्य प्रदेश) में आयोजित अ.भा. श्रमण संघीय सम्मेलन में इस गंभीर मुद्दे पर विचार सहित मनन कद दिशा-निर्देश तय किये गए थे, किन्तु अभी इसके क्रियान्वयन के कोई ठोस नतीजे सामने नहीं आये। विहार यात्रा चाहे वह शेषकाल में हो या चातुर्मास के स्थल तक साधु-साध्वीवृंद द्वारा की जा रही हो, इसके दौरान भारी वाहन पैट्रोल वाहन उनसे भिडंत कर, टक्कर मार कर गिराने, घायल करने या उन्हें मृत्यु तक पहुंचाने के अनुसार पिछले पाँच वर्षों में हुई। 150सड़क दुर्घटनाओं में हमारे करीब 45 चरित्र महान आत्माओं के साधु-साध्वीगणों के प्राण हरण करने के साथ अनेक संतगण गंभीर रुप से जख्मी हो गए। अहिंसा के पुजारियों तथा भगवान महावीर स्वामी के पक्ष का अनुशरण कर उनके बताए मार्ग पर चलने वाले हमारे धर्म गुरुओं का इस प्रकार से बेरहमी से लापरवाही पूर्वक देवलोक गमन होना बेहद चिंता का विषय है। समय के अनुसार इस पर विचारकर हमारे गुरु भगवंतों की विहार यात्रा को सुनिश्चित, सुरक्षित करने, करवाने की सुव्यवस्था करवाना जरुरी है, समाज के समक्ष यह यक्ष प्रश्न है। ✧✧

दूसरों का जो आचरण तुम्हे पसंद नहीं,
वैसा आचरण दूसरो के प्रति न करो।

ध्यान...

- दिपाली सुमतिलाल मुथा दिया, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

ध्यान के लक्षण ...

3. **शांतचित्तः-** मन का शांत रहना भी जरुरी है। जो परिवह और उपसर्ग में शंत नहीं रह सकता वह ध्यान नही कर सकता।
4. **वशीः-** इंद्रियों पर काबू करना भी ध्याता के लिये जरुरी है।
5. **स्थिरः-** आसन पर रहने के बाद ध्याता को स्थिर रहना चाहिए।
6. **जिताक्षः-** जिसे सांसारिक विषय सुख की अभिलाषा न हो वही ध्यान ठीक रुप से कर सकता है।
7. **संवृतः-** जिसने अपनी आत्मा को पाँच महाव्रतों के पालन में लगा दी है तथा मनोवृत्तियों को विकार मार्ग से हटाकर आत्मज्ञान की खोज में लगा दी है एवं जिसमें लोलुपता का परित्याग कर दिया है। वह ध्यान ठीक रुप से कर सकता है।
8. **धीरः-** परविह उपसर्ग में धैर्य रखना।

ध्यान से हमारी क्षमा बढ़ेगीः-

1. शरीर जितना ज्यादा विश्रांती में जा सकता है। उतना ही श्रम करने की क्षमता उसकी बढ़ जाती है। जितना ज्यादा श्रम करेगा उतना ही सक्षम होगा। शांत मन नहीं दिशा में सोच सकता है। सृजनात्मक हो सकता है। इसलिए ध्यान विधि में शिथिल मन की आवश्यकता है। शिथिल मन शारीरिक स्वस्थता के लिये लाभकारी है। निरोगी शरीर ज्यादा काम करने की क्षमता रखता है।
2. ध्यान में चित्त एकाग्रित होता है। एकाग्रिचित ही किसी भी चीज़ की गहराई तक पहुंच सकता हैं बाहर के जगत में भी किसी वस्तु को प्राप्त करना हो तो मन की एकाग्रता सहायक होती है। एकाग्रता से स्मरण शक्ति बढ़ती है। मन का भटकना कम होता है।
3. एकाग्रता से होश जगेगा और होश के कारण बुद्धी निद्रा होगी। जिससे बाहर के जगत में सफलता पाना अत्यंत सरल होगा कुशलता ज्यादा होती है। ऐसे इंसान के सफलता चरण चूमती है।
4. मन बाहर के जगत में ही उलझकर स्वयं को थका देता है। अल्प ऊर्जा की वजह से जल्दी थक जाता है। ध्यान इस थकावट को रोकता है। मन की भी अपनी शक्तियां हैं। मन आप में बहुत बड़ा आश्चर्य है। ध्यान उन शक्तियों का जगाने का मार्ग है।

जैसेः- संकल्प शक्ति, आत्मसम्मोहन इत्यादि

मानसिक लाभः- ध्यान समय की बरबादी नहीं बल्कि एक आवश्यक पूँजी है। जिसके बिना हम अपनी योग्यता से काम कर सकते हैं।

संस्कारः-

1. बहुत उत्साह, उमंग में आत्म-स्वभाव में जा रही हूँ।
2. मेरी काया स्थिर हो रही है।
3. आलस्य शरीर से भाग रहा है
4. भागते हुए आलस्य मुझे नज़र आ रहा है।
5. शरीर बहुत हल्का नज़र आ रहा है।
6. शांति, समाधि, आनंद की प्राप्ति हो रही है।
7. शांति, समाधि आनंद को हमेशा के लिये टिकाये रखना है।
8. मुझे कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ना है।
9. शरीर के रोग दूर होते नज़र आ रहे हैं।
10. अज्ञान आत्मा से दूर हो रहा है
11. सद्ज्ञान आत्मा में प्रवेश कर रहा है।
12. सारी समझ विकसित हो रही है।
13. चारों तरफ प्रकाश अंदर बढ़ रहा है।
14. भय दूर हो रहा है।

क्रमशः...

विज्ञान और जैन धर्म

- **निधि दिनेश लोढ़ा,** कांदिवली मुंबई, (महाराष्ट्र)

जैन धर्म में कहा जाता है कि पानी में बहुत जीवन होते है, अधिक नहोने से बहुत पानी व्यर्थ बह जाता है और जीव हिंसा का पाप लगता है परंतु कई लोग सोचते हैं कि हम रोज नहाने से ही साफा और स्वस्थ रहेंगे। ठंड के मौसम में भी ऐसा होता है कि बच्चों का नहाने का मन कम होता है परंतु माँ जबरदस्ती बच्चे को नहलाती हैं। Dr. Ranella Hirsch एक त्वचा रोग विशेषज्ञ है। (Dermatologist) उन्होंने एक लेख में लिखा है कि हमें रोज नहाने की जरुरत नहीं है। हमारे skin त्वचा की सबसे ऊपरी परत को stratum cernuem कहते हैं। उस पर कई सारे Micros, bacteria और cangii रहते हं जो मदद करते हैं skin cells को रिपेयर करने में और जो खराब बैक्टीरिया और वाइरस होते हैं उनसे लड़ने में और उन्हें खत्म करने में, पर जब हम ज्यादा देर तक या दिन में कई बार नहाते हैं तो चमड़ी पर खराब बैक्टीरिया और वाइरस के साथ अच्छे बैक्टीरिया और वाइरस भी धुल जाते हैं, जिससे चमड़ी का इंफेक्क्शन होने के चांसेज बढ़ जाते हैं।

कई लोग साबुन भी बहुत ज्यादा लगाते हैं जिससे गुड़ बैक्टीरिया तो धुल जाते हैं साथ ही साथ उनकी चमडी सूखी हो होती है क्योंकि साबुन त्वचा में लगे हुई oil glands का oil भी धो देते हैं चमड़ी खराब हो जाती है और हानिकारक बैक्टीरिया का काम आसान हो जाता है और त्वचा का संक्रमण आसानी से हो जाता है।

यदि आपका रोज का कार्य बहुत मेहनत वाला है और आपको बहुत पसीना आता है तो अधिकतम दिन में एक बार ही नहाईये या गीले कपड़े से शरीर को पौंछ लीजिये। साबुन का इस्तेमाल न करें तो सबसे अच्छा, आवश्यक होने पर दही, बेसन को मिलाकर उबटन से नहा लें।

सर्दी के मौसम में गुनगुने पानी में नेपकिन भिगोकर शरीर पौंछ लें, अत्यधिक तेज गर्म पानी से नहाने वालों के भी त्वचा संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। जिनका काम कम शारीरिक श्रम वाला है और पसीना बहुत कम आता है तो वे एक दिन छोड़कर एक दिन नहायें। रोज नहाना आदत हो सकती है पर आवश्यकता नही और आदत आदमी चाहे तो बदल सकता है।

पहले घरों में नल भी नहीं होता था, पानी दूर से लाना पड़ता था, उसमें मेहनत लगती थी अतः पानी का दुरुपयोग कम होता था परंतु अब हर कमरे में बाथरुम होता है और गर्मियों में लोग दिन में दो तीन बार भी नहा लेते हैं, जिसकी आवश्यकता नहीं है बल्कि त्वचा और खराब हो जाती है। ✧✧

गुजर जायेगा ये बुरा दौर भी,
जरा इत्मीनान तो रख रब
(ईश्वर) पर,
जब मंदी ही नहीं ठहरी तो
तेजी की क्या हैसियत है।

समाचार - प्रकाश

सीवाना में गुरु पुष्कर जयंती भव्यता के साथ संपन्न

सीवाना (राजस्थान) : प्रतिवर्ष की भांति उपाध्याय पू. श्री रमेश मुनि जी म., प्रवर्तक पू. डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म., साहित्य दिवाकर पू. श्री सुरेन्द्र मुनि जी म., सेवाभावी पू. श्री दिपेश मुनि जी म. आदि ठाणा एवं महासाध्वी उप-प्रवर्तिनी पू. श्री चारित्रप्रभा जी म., पू. डॉ. रूचिकाश्री जी म., पू. डॉ. राजश्री जी म., विदुषी पू. श्री जिनाज्ञाश्री जी म., अध्यात्म प्रेमी पू. श्री ईशिताश्री जी म., सेवाभावी पू. श्री प्रतिज्ञाश्री जी म. आदि ठाणा एवं मूर्तिपूजक संत साध्वी जी म. के पावन सान्निध्य में तथा बाहर से पधारे हजारों श्रावक गुरु भक्तजनों की पावन उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुए। समारोह की अध्यक्षता जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन ने की। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री बालासाहेबजी चोरड़िया जैन, युवा संरक्षक श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिराजी सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री सौ. विनिताजी राजेन्द्रजी ओरड़िया जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा सौ. मंजूजी दर्डा जैन आदि अतिथि दीर्घा में विराजमान थे।

समारोह गौरव स्वामीजी श्री राहुलेखरानंद जी म. एवं ठाकुर चक्रवर्तीसिंह जी, पूर्व मंत्री गोपाराम जी मेघवाल, पूर्व विधायक कानसिंह जी के साथ स्थानीय पंचायत समिति के प्रधान, सरपंच आदि गणमान्य महानुभावों के अलावा विशाल पाण्डाल में दिल्ली, जयपुर, चण्डीगढ़, गुडगांव, चेन्नई, बैंगलोर, मुंबई, अहमदाबाद, पाली, आसिंद, सवाई माधोपुर, किशनगढ़, मदनगंज, पीपाड आदि सैकड़ों गांवों, नगरों के श्रावकों की भावना के साथ सर्वप्रथम सामूहिक जाप प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात् महासतीवृंद द्वारा मंगल गीत व प्रवचन प्रदान कर वंदनाएं अर्पित की गई। विभिन्न श्रीसंघों के प्रमुखजनों द्वारा गुरु पुष्कर गुणानुवाद एवं विराजमान गुरुदेवों के चरणों में विनंती भाव समर्पित किए गए। संघ द्वारा चातुर्मास के लाभार्थी परिवार बाबूलालजी रांका, अशोककुमार जी रांका का एवं नवकारसी भोज के लाभार्थी वयोवृद्ध देवीचंद जी कानूंगो परिवार के सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन किया गया। दिल्ली नवकार तीर्थ के डी. सी. छाजेड़ जी, महेन्द्रजी डोसी, राजकुमारजी भण्डारी आदि द्वारा समाजरत्न श्री अशोकजी रांका का विशेष अभिनंदन संपन्न होने के बाद विराजमान समस्त श्रीसंघों का एवं जैन कॉन्फ्रेंस पदाधिकारीजनों का मुख्य रूप से पधारे स्वामीजी का सत्कार सम्मान करने के बाद जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, सौ. रूचिराजी सुराणा जैन, विनिताजी ओरड़िया जैन ने अपने विशेष भाव प्रकट किए।

इस भव्य समारोह में साहित्य दिवाकर पू. श्री सुरेन्द्र मुनि जी म. द्वारा लिखित आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी जीवन दर्शन का अंग्रेजी संस्करण का विमोचन उदारमना दानदाता द्वारा किया गया। जैनाचार्य देवेन्द्र मुनि जी म. श्रमण संघ के महान आचार्य पद पर विराजमान रहे। चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत ग्रन्थ में उनकी जीवनी का सुन्दरतम वर्णन किया गया है। कार्यक्रम का सफल बनाने में सर्वश्री पारसमलजी जीभाणी, पुखराजजी जीभाणी, बाबूलालजी लुंकड़, अशोकजी महेन्द्रजी रांका, केशरीमलजी चोपड़ा, खिमराजजी जिभाणी, डुंगरजी जिभाणी, राजमलजी भरतजी कानूंगो, मदनजी रांका, सुमेरजी मेहता, लक्ष्मीलालजी कोठारी, राजेन्द्रजी जोगेन्द्रजी रांका, शांतिलालजी छाजेड़, घेवरचंदजी कानूंगो, मोतीलालजी, महेन्द्र जी जीभाणी, झंकारजी चोपड़ा, बाबूलालजी हुण्डिया एवं सकल जैन समाज सीवाणा आदि सभी का आत्मी सहयोग सराहनीय रहा।

प्रेषक : अशोक रांका जैन

गाजियाबाद में पू. श्री मथुरा देवी जी म. का 71वाँ पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) : विगत 29 दिसम्बर २०१७ को गाजियाबाद स्थित श्री जैन धर्म स्थानक में खद्दरधारी, बालब्रह्मचारिणी, प्रातः स्मरणीय, दृढ़ अनुशासिका एवं महासाधिका पू. श्री मथुरा देवी जी म.सा. का 71वां पुण्य स्मृति दिवस श्रमणी श्रेष्ठा पू. श्री मनीषा जी म. सा. आदि ठाणा 8 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम में भाग लेने समारोह गौरव के रूप में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन नासिक से पधारे।

इस अवसर पर पू. श्री मनीषा जी म.सा. ने कहा कि परम पूज्यनीया गुरुणी जी म.सा. मथुरा देवी जी अध्यात्म जगत की एक महान तथा उत्कृष्ट साधिका थी। उन्होंने जन-जन को अहिंसामयी पावन धर्म की प्रेरणा देकर आत्मबोध कराया था, अनेकों नवयुवक-युवतियों को व्यसन मुक्त कर धर्म एवं ज्ञान का अमृत पिलाया था। आराध्या गुरुणी म.सा. का पुण्य स्मरण, संयम, साधना, त्याग एवं तपस्या का स्मरण है।

अपने सम्बोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन ने कहा कि महापुरुषों के जीवन से समाज की बगिया खिलती है और समाज में सद्गुणों का संचार होता है। महापुरुषों के द्वारा दिये गये ज्ञान का सूर्य सदा उदयमान रहता है। गुरुणी जी पू. श्री मथुरा देवी जी म. सा. का जीवन विराट व्यक्तित्व से युक्त था। हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में ध्वजारोहण श्रीमती सीमाजी करुणजी जैन गाजियाबाद ने किया। कार्यक्रम का संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन जी ने किया। कार्यक्रम में गाजियाबाद के अतिरिक्त दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के सैंकड़ों पुरुष-महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश शासन के खाद्य एवं रसद राज्यमंत्री श्री अतुल जी गर्ग मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। गाजियाबाद श्री जैन स्थानक के महामंत्री एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय श्री सुशीलकुमारजी जैन के बड़े भ्राता श्री विमल कुमारजी जैन (समारोह अध्यक्ष) जैन आयरन ग्रुप गाजियाबाद, श्री सुखपाल सिंह जैन (स्वागताध्यक्ष) संगम स्टील ग्रुप गाजियाबाद, श्री विनयजी जैन प्रांतीय-अध्यक्ष हरियाणा, श्रीमती कुसुमजी जैन चेयरमैन-अंतर्राष्ट्रीय मानव मिलन एवं हरियाणा प्रांतीय महिला अध्यक्षा, श्री सुशील कुमारजी जैन- ाष्ट्रीय मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस, श्री पुनीत जैन-चेयरमैन बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ अभियान, उत्तर प्रदेश एवम् उत्तराखण्ड़) उपस्थित थे। श्री एस. एस. जैन सभा गाजियाबाद द्वारा महासाध्वी श्रमणी श्रेष्ठा पू. श्री मनीषाजी म. को **'संयमी शिरोमणी'** के पद से शिशोभित करते हुए आदर की चादर प्रदान की तथा नवदीक्षित पू. श्री सिद्धश्री जी म. को **'तरुण तपस्वी'** की उपाधी प्रदान की। राष्ट्रसंत, आगम रत्नाकर, युग पुरुष, अखिल भारतीय श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी मुनि मायारामीय जैन संघ के पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री सुभद्र मुनि जी म. द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री संजयजी जैन-पंजाबी को **'गौ-सेवक रत्नाकर'** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रेणुजी जैन एवं मंत्री श्रीमती सीमाजी जैन ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि श्री विनयजी 'देवबंदी' ने काव्य पाठ किया। गौतम प्रसादी के लाभार्थी सुश्राविका स्व. श्रीमती सुखदेवीजी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरलालजी जैन परिवार, श्रीमती संतोषजी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री जयनारायणजी जैन, श्री रामदयाल जैन, श्री जे. डी. जैन जी, श्री घनश्याम दास जी जैन, समाज रत्न श्री संजय जैन सुपुत्र स्व. श्री मौजीरामजी जैन परिवार तथा श्री जे. डी. जैन जी के सुपौत्र कुमार वंश जैन का स्वागत किया गया। लक्की ड्रा के लाभार्थी श्री सुशील कुमारजी जैन-राष्ट्रीय मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस थे। उपस्थित सैंकड़ों श्रद्धालुजनों ने अपने-अपने हाथ उठाकर पूज्य गुरुणी जी म.सा. को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। महाराज सा. की स्मृति में श्री दीपकजी गोपालजी जैन, रोहिणी निवासी ने प्रभावना के रूप में उपस्थित श्रद्धालुजनों को अत्यंत ही सुंदर बैग वितरण किए। हर्ष व उल्लास पूर्ण कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली के जनरल मैनेजर श्री मानकशाह जी विशेष रुप से उपस्थित थे।

प्रेषक : सुशील जैन

कटक में त्रिदिवसीय कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया

कटक (उड़ीसा) : रजत नगरी कटक के अहिंसा भवन में परम पूज्य महासाध्वी पू. डॉ. विजयश्री जी म. 'आर्या' एवं पू. श्री तरुलताश्री जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। आयोजन में गोंडलगच्छरधिपति परम पूज्य श्री जयंतीलाल जी म. की जन्म जयंती, भण्डारी परम पूज्य श्री पदमचंद जी म. की जन्म जयंती, उपाध्याय परम पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म. की दीक्षा जयंती, पंजाब प्रवर्तिनी परम पूज्या श्री केशरदेवी जी म. की दीक्षा जयंती, जैन इतिहास चंद्रिका पूज्या डॉ. विजयश्री जी म. 'आर्या' की दीक्षा जयंती एवं विश्व ध्यान दिवस को ध्यान योगी पूज्य आचार्य प्रवर डॉ. शिवमुनि जी म. द्वारा इंदौर में आयोजित विश्व ध्यान दिवस के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण द्वारा आचार्यश्री जी के साथ सभी ने ध्यान किया। अंत में सभी का आभार एवं साधुवाद करते हुए अध्यक्ष श्री अशोकजी नाहटा जैन ने महासतीजी के संयम यात्रा की मंगल कामनाकी। महासती जी द्वारा मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। **प्रेषक : अशोक नाहटा**

नौ दिवसीय नवपद आयंबिल ओलीजी तपाराधना पूर्ण

बखतगढ़ (म.प्र.) : नौ दिवसीय आयंबिल ओलीजी तपाराधना आयोजन की पूर्णता हुई। देशभर में बड़ी संख्या मे आराधना हुई पक्खी पर्व होने से दोहरा लाभ लिया। इसमें देशभर के श्रीसंघों में आराधकों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर नौ दिनों तक आयंबिल तप किया। आगम शास्त्रों में यह आराधना करने का विशेष महत्व बताया गया हैं। इसमें क्रमानुसार पांच दिन केवल चांवल, गेहूं, चना, मुंग, उड़द एवं शेष 4 दिन चांवल की सामग्री का उपयोग किया। गौरतलब हैं कि इस आयंबिल तप में तेल, घी, दूध, दही, नमक, मिर्ची मसाला आदि विगय रहित केवल उबली व सिकी खाद्य सामग्री का उपयोग एक ही बैठक पर किया जाता हैं। आराधना का मुख्य आयोजन मेघनगर में विराजित जिनशासन गौरव आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेवश्री उमेशमुनिजी म. के प्रथम शिष्य एवं धर्मदास गणनायक प्रवर्तक पू. श्री जिनेंद्र मुनिजी म., पू. श्री संदीप मुनिजी म., पू. श्री दिलीप मुनिजी म., पू. श्री आदित्य मुनिजी म. ठाणा 4 एवं साध्वी पू. श्री निखिलशीलाजी म., पू. श्री श्रीकांताजी म. ठाणा 7 मंडल के सानिध्य में हुआ। श्रीधर्मदास गण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी बुपक्या, अभा श्रीधर्मदास स्थानकवासी जैन युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री देवेंद्रजी गादियां, महामंत्री द्वय श्री रूपेशजी बुरड़, श्री विनोदजी धोका, स्थानीय संगठन अध्यक्ष श्री नीलेशजी पटवा, अभा श्रीचंदना श्राविका संगठन की राष्ट्रीय अध यक्ष सौ. सुनीता गादिया ने बताया कि इस आराधना में मध्यप्रदेश सहित गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, विदर्भ आदि अनेक के श्रीसंघों के श्रावक, श्राविकाओं व बच्चों ने बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर आराधना की हैं। इसी दिन पक्खी पर्व भी होने से आराधकों को आराधना करने का दोहरा लाभ मिला। आगम अनुसार तप करके पर्व मनाने से उसका लाभ कई गुना बढ़ जाता हैं। इस अवसर पर श्रावक श्राविकाओं ने उपवास, आयंबिल, एकासन आदि विभिन्न तपाराधनाएं की। तप में लगे दोषों की विशुद्धि के लिए धर्म स्थानों पर दोपहर में आलोचना पाठ आदि का सामुहिक वाचन किया। श्रीवर्धमान स्थानक भवन बखतगढ़ में नवकार महामंत्र के जाप हुए। पश्चात गुरु चालीसा व गुरुगुणगान की स्तुति की गई। जाप की प्रभावना वितरण का लाभ श्री शांतिलालजी ओरा परिवार ने लिया। शाम को धर्म स्थानों पर श्रावक श्राविकाओं ने पृथक-पृथक सामुहिक प्रतिक्रमण कर चौरासी लाख जीवायोनि से क्षमापना की। **प्रेषकः दिलीप दरड़ा**

माता पिता के इकलौते पुत्र वरूण जैन बने वरूण मुनि जी

जोधपुर (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जोधपुर के तत्वावधान में श्री रूप सुकन चातुर्मास व्यवस्था समिति की ओर से महावीर कॉम्पलेक्स में शनिवार सुबह आयोजित एक भव्य समारोह में माता-पिता के इकलौते पुत्र वैरागी वरुण जैन देश-विदेश से आये हजारों जैन बंधुओं की साक्षी में जैन भगवती दीक्षा ग्रहण कर जैन संत बने। श्रमण सूर्य मरुधर केसरी पू. श्री रुपचंद मुनि जी ने वैरागी वरुण का नामकरण डॉ. वरुण मुनि के रुप में किया। कार्यक्रम के पश्चात दीक्षा महोत्सव के धर्म माता-पिता सौ. चन्द्रा-मोहन सिंधी के नेहरू पार्क स्थित निवास स्थान से महावीर काम्पलेक्स तक मुमुक्षु की महाभिनिष्क्रमण यात्रा निकाली गई। जहाँ पर मुमुक्ष के परिवारजन उन्हें भुजाओं में उठाकर गु३देव के सान्निध्य में लेकर गए, जहाँ गुरुदेव को वंदन के बाद मुमुक्षु का जैन कॉन्फ्रेंस एवं अतिथियों ने अभिनंदन किया।

समारोह में पंचासीन पू. श्री रुपचंदजी 'रजत' म. पू. श्री सुकन मुनि जी, प्रू. श्री अमृत मुनि जी, पू. श्री अमरेश मुनि जी म., पू. श्री महेश मुनि जी म., पू. श्री राकेश मुनि जी म. पू. श्री मुकेश मुनि जी म., पू. श्री हरीश मुनि जी म., पू. श्री नानेश मुनि जी म., पू. श्री हितेश मुनि जी म., पू. श्री सचिन मुनि जी म. एवं बालयोगी पू. श्री अखिलेश मुनि जी म. के सान्निध्य में मुमुक्षु ने अपने वीर माता-पिता सौ. संतोषबाई जी व श्री छराज पीतलिया, धर्म माता-पिता सौ. चन्द्रा-महेन्द्र सिंधी, जैन कॉन्फ्रेंस एवं श्री संघ से दीक्षा की आज्ञा ली और फिर पू. श्री रुप मुनि जी म. के मुखारविन्द से दीक्षा मंत्र के पाठ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। गुरुदेव ने मुमुक्षु के सिर पर केसर से स्वास्तिक का तिलक किया, रजो हरण और काष्ठ के पात्र प्रदान कर मुमुक्षु को डॉ. वरुण मुनि का नाम दिया तथा डॉ. वरुण मुनि को तपस्वी रत्न घोषित सम्राट पू. श्री अमृत मुनि का शिष्य घोषित किया। इसी के साथ ही माहवीर काम्पलेक्स जय-जयकारों के उद्घोष से गूंज उठा। **प्रेषक : वरुण जैन**

पावन जन्म जयंती महोत्सव

आसीन्द (राजस्थान) : महासाध्वी उप प्रवर्तिनी डॉ. श्री दिव्यप्रभा जी म. ठाणा 5 के सान्निध्य में आत्मज्ञानी युगप्रधान आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की 76 वीं एवं अध्यात्मयोगिनी जिनशासन की शान श्री कुसुमवती जी म. की 92 जन्म जयंती समारोह पंचदिवसीय कार्यक्रम के रुप में धूमधाम से मनाया गया।

1. 7 सितम्बर को सजोड़े णमोत्थाणं का जाप का आयोजन हुआ जिसमें 150 जोडों ने भाग लिया।
2. 8 सितम्बर को सामुहिक एकासन व तप दिवस के रुप में मनाया।
3. 9 सितम्बर को सांस्कृतिक कार्यक्रम एक शाम शिवकुसुम के नाम, जिसमें चन्दनबाला बालिका मण्डल व महिला मण्डल ने आकर्षक नाटिका का आयोजन किया।
4. 10 सितम्बर को गुणानुवाद समारोह में उदयपुर, चित्तौड़, भिनाय, गंगापुर, कुवारिया, मसुदा, बदनोर से सैंकडों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।
5. 11 सितम्बर सेवा दिवस पर स्वः इन्दरमल जी श्रीमान की स्मृति में आँखों का कैम्प लगाया गया जिसमें 140 रोगियों का उपचार किया व 45 मोतियाबिंद रोगियों के ऑपरेशन किये गये।

प्रेषक : पूरणमल चौधरी

मुस्लिम समाज की ओर से गौ रक्षा के लिये समिति गठित

कानपुर (उत्तर प्रदेश) : राष्ट्रसंत पू. श्री कमल मुनि कमलेश के सान्निध्य में अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली की ओर से आनंदपुरी जैन स्थानक के अंदर राष्ट्रीय मुस्लिम अहिंसा मंच नई दिल्ली के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अख्तर भाई रावल ने स्पष्ट कहा कि पैगंबर मोहम्मद हिंसा के सख्त खिलाफ थे करुणा और दया के भंडार थे प्रेम व मोहब्बत की उनका पैगाम था कुरान मैं कहा है कि गाय का दूध घी स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है गाय का मांस हानिकारक है राष्ट्रीय मुस्लिम अहिंसा मंच ने सात गौशालाएं पू. श्री कमलेश मुनि जी की प्रेरणा से चालू की गई है देश के 335 जिलों के अंदर दौरा करते हुए मुस्लिम समाज की ओर से गौ रक्षा की समिति गठित की गई है आतंकवाद इस्लाम के माथे पर कलंक हैं देश की रक्षा के लिए हमारा बच्चा बच्चा न्योछावर होने को तैयार हैं पाकिस्तान बाज नहीं आया अपनी हरकतों से और उसको भी सबक सिखाने की तैयारी है पाकिस्तान आतंकवादियों का घर बन चुका है केंद्र सरकार से मांग करते हैं पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करें। पू. श्री मुनि कमलेश ने कहा कि मुस्लिम समाज ने मौलाना मौलवी इमामों ने मिलकर फैसला लिया है कि कोई भी गो हत्या करता पकड़ा गया 51000 का जुर्माना उस पर किया जाएगा गाय बचेगी तो मानवता बचेगी राष्ट्रीय मुस्लिम अहिंसा मंच के प्रस्ताव पास किया देश में कम से कम 108 गोशालाएं मुस्लिम समाज की ओर से संचालित करने का प्रयास करेंगे नीमच अहमदाबाद दिल्ली मेवात जोधपुर आदि कई स्थानों के लोगों ने भाग लिया पू. श्री मुनि कमलेश और अख्तर भाई रावल की संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें राष्ट्रीय एकता गोरक्षा और व्यसन मुक्ति के लिए हजारों कार्यकर्त्ता जनता के विचार परिवर्तन के लिए सेमिनार आयोजित करेंगे गांव-गांव घर घर जाएंगे अभी भी आज शाम गोरखालैंड और मिजोरम, वेस्ट बंगाल की यात्रा करके कार्यकर्ता हैं 2009 में पू. श्री मुनि कमलेश की प्रेरणा से राष्ट्रीय मुस्लिम अहिंसा मंच का गठन दिल्ली में हुआ था इसमें कितने मौलाना मौलवी भी हैं आईपीएस भी हैं संघ अध्यक्ष श्री धनंजय कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया संघ की ओर से सबका अभिनंदन और सत्कार किया गया पू. श्री कौशिक मुनि जी ने मंगलाचरण किया श्री घनश्याम मुनि नेभी विचार व्यक्त की।

प्रेषक : धनंजय कुमार

पू. श्री सत्यसाधना जी म. का 44वां दीक्षा दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गय

इचलकंराजी (महाराष्ट्र) : उप-प्रवर्तिनी संथारा प्रेरिका सत्यसाधना जी म. तपचक्रेश्वरी पू. श्री अरुणप्रभा जी म. साध्वी पू. श्री अर्हतज्योति जी म., साध्वी पू श्री तन्मयदर्शना जी, साध्वी पू. श्री हितसाधना जी म. साध्वी पू. श्री हर्षप्रज्ञा जी म. साध्वी पू. श्री गुरु दाया जी म., साध्वी पू. श्री गुरुकीर्ति जी म, साध्वी सौम्य ज्योतिजी म. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में उप-प्रवर्तिनी संथारा प्रेरिका सत्यसाधना जी म. का 44वां दीक्षा दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। 200 के करीबन सामायिक के तेले हुए तथा पार्श्व पद्मावती अनुष्ठान के 16 एकाशन की पूर्णाहुति में लगभग 245 लोगों ने एकाशन किया। सभी महासतियों जी ने गुरु गुणानुवाद किया। इस अवसर पर श्री रमेश कुमार जी खिंवसरा जैन की तरफ से 44लक्की ड्रा एवं प्रभावना, संसारिक पक्षीय भाई गौतमचंद जी भुरावत एवं श्रीसंघ्ग की तरफ से प्रभावना रखी गई। हैदराबाद, सिकन्दराबाद, चेन्नई, औरंगाबाद, अहमदाबाद, नाशिक, नीमच, पुणे, कराडद्व कपासन, केड़गांव, जयसिंगपुर माधवनगर आदि शहरों से अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

प्रेषक : पदमचंद जी खाबिया

मांटुगा उपसंघ की गुरुदर्शन यात्रा का आयोजन

मुबई (महाराष्ट्र) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ मेवाड मुंबई, सायन कोलीवाड़ा, धारावी, मांटुगा, अंटापहिल, वडाला संघ की ओर से आयोजित गुरुदर्शन यात्रा सर्वप्रथम उज्जैन महावीर भवन सुभाष नगर में चातुर्मास पर विराजित श्रमण संघीय महासती मधुकुंवर म. आदि ठाणा 3 के प्रवचन, सेवा दर्शन का लाभ लेकर वहां आयोजित प्रेमकंवरजी म. की 80वीं जन्म जयंती में भाग लिए, मांटुगा उपसंघ के मंत्री किशनलाल लोढ़ा ने भी जन्म जयंती पर गुणगान करते हुए कहा कि महासती जी तप, त्याग, ज्ञान के भण्डार थी, उनके गुणों को अपने जीवन के उतारेंगे तो अपनी आज जन्म जयंती मनाना सार्थक होगा। इस दौरान स्थानीय संघ द्वारा मांटुगा के अध्यक्ष श्री भोलीलालजी कोठारी जैन का स्वागत किया गया, कोषाध्यक्ष श्री दयालालजी पामेचा जैन ने बताया कि मांटुगा संघ के सदस्य उज्जैन के जैन तीर्थों के दर्शन करते हुए महाकालेश्वर मंदिर, अवंतिका पार्श्वनाथ मंदिर, काल भैरव, मंगल नाथ, मणिभद्र मंदिर, 108 नागेश्वर पार्शनाथ दादा के दर्शन किये गए, आरती का लाभ श्री जीतमलजी कोठारी जैन के साथ पूरे संघ ले लिया। श्री ममूलचंदजी धाकड जैन के अनुसार संघ इंदौर में आचार्यश्री डॉ. श्री शिवमुनि जी म. के प्रवचन, दर्शन, सेवा का लाभ लेगा। यह जानकारी संघ के श्री देवलालजी जैन रांका ने दी। **प्रेषक : देवलालजी जैन रांका**

औंध के आनंद दरबार में नेत्र चिकित्सा शिविर

औंध, पुणे (महाराष्ट्र) : औंध जैन श्रावक संघ और महर्षि आनंद सेवा भक्ति प्रतिष्ठान की ओर से औंध के आनंद दरबार में नेत्र चिकित्सा शिविर का 15 अक्टूबर 2017 किया गया जिसमें में 276 मरीजों की आँखों की जांच की गई। हॉस्पिटल के डॉ. श्री प्रकाश एवं डॉ. वर्धमान, सौ. डॉ. रुचिता कांकरिया का भरपूर सहयोग मिला। शिविर का उद्घाटन सौ. निर्मला तातेड आनंद राहुल छाजेड़ के कर कमलों द्वारा हुआ। शिविर में एशियन आई हॉस्पिट के डाक्टर्स और स्टाफ ने 276 मरीजों की निशुल्क आँखों जाँच एवं चश्मे वितरित किये गये। औंध श्री संघ के अध्यक्ष श्री शिरीष जी चोपड़ा चातुर्मास समिति अध्यक्ष रमणलाल लुंकड, महामंत्री सचिन नहार, उपाध्यक्ष धरमचंदजी फुलफगर, श्री रविन्द्रजी बलाई, श्री सतीशजी सेठिया एवं महर्षि आनंद सेवा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री डॉ. प्रो. अशोककुमार पगारिया जैन, कार्याध्यक्ष श्री संदीपजी फुलफगर, सचिव श्री प्रणीतजी बाघमार ने अपना योगदान दिया। **प्रेषक : डॉ. अशोककुमार पगारिया जैन**

गणेश बाग श्री संघ) का नवनिर्मित आधुनिक कार्यालय का उद्घाटन

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय सलाहकार राजर्षि प.पू.श्री सुमतिप्रकाश जी म. के 79 जी जन्मोत्सव के अवसर पर बेंगलूरु स्थित जैन समाज का धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र गणेश बाग के परिसर में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी बावीस संप्रदाय जैन संघ ट्रस्ट (गणेश बाग श्री संघ) का नवनिर्मित आधुनिक कार्यलय का उद्घाटन पू. श्री सुमतिप्रकाशजी म., वाचनाचार्य पू. श्री विशाल मुनिजी म. एवं गुरु भगवंतों के पावन सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर गणेश बाग श्री संघ के अध्यक्ष लालचंद मांडोत, मंत्री सम्पतराज मांडोत, पदाधिकारिगण सम्पतराज कोठारी, सुनील सांखला जैन, सुदर्शन मांडोत, शांतिलाल लुनावत, त्रिलोकचंद कटारिया, बिपिन पोरवाल एवं ट्रस्ट के अन्य सदस्यगण और समाज के विभिन्न संघ संस्थाओं के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में धर्म श्रद्धालु उपस्थित थे। इस अवसर पर वाचनाचार्य पू. श्री विशाल मुनिजी म. ने गणेश बाग श्री संघ को धर्म के अभिवृद्धि एवं संत समाज की सेवा में सदैव अग्रणीय रहे ऐसी मंगलकामनायें प्रेषित करते हुए मंगलपाठ फरमाया। कार्यक्रम का संचालन सुनील सांखला जैन ने किया और संघ मंत्री सम्पतराज मांडोत सभी का स्वागत किया। **प्रेषक : सम्पतराज मांडोत**

सौ. माधवी सुखानी के मासक्षमण तप का महोत्सव

रायचूर (कर्नाटक) : रायचूर नगर के पुण्योदय से हमें आध्यात्म योगी, उपाध्याय प्रवर श्री पुष्करमुनि जी म. एवं राजस्थान सिंहणी पू. श्री चारित्रप्रभा जी म. की सुशिष्या दक्षिण दीपिका महासती जी पू. श्री डॉ. प्रतिभाजी म. एवं आदर्श सेवा भावी महासती जी श्री मह्विल्लकंवर जी म. आदि ठाणा के अभूतपूर्व चातुर्मास का लाभ प्राप्त हुआ है। महासतियांजी की प्रेरणा से नगर में धर्म ध्यान, सामायिक-स्वाध्याय चातुर्मास का लाभ प्राप्त हुआ है। महासतियाँ जी की प्रेरणा से नगर में धर्म-ध्यान, सामायिक-स्वाध्याय, तप-जप आदि का अनुष्ठान बहुत उत्साहपूर्वक गतिमान है। इस चातुर्मास की यह विशेषता है कि जिन्होंने कभी एकासन भी नहीं किया अठाई, नौ आदि की तपस्याएं की हैं। बड़ी संख्या में युवाओं ने गुप्त रुप से तेले, पचोले, अठाई आदि तप की आराधना की है।

श्री रिखबचंद जी जैन एवं सौ. रतनबाई सुखाणी का परिवार तपानुष्ठान में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। उनके परिवार में कई अठाई, नौ आदि बड़ी तपस्याएं हुई हैं। इसी लड़ी की कड़ी में पदक के समान श्री रिखबचंदजी एवं सौ. रतनबाईजी सुखाणी की धर्म पत्नी सौ. माध्वी सुखाणी जैन ने मासक्षमण तप की आराधना की।

प्रेषक : रतनलाल धोका

श्रुतदेव भक्तियात्रा में उमडा जन सैलाब

चेन्नई (तमिलनाडु) : उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. एवं तप गंगोत्री महासती संतोषजी म. के नेश्रा में आनंदतीर्थ समवशरण, टी-19 रानी गंज सिकंदराबाद में 21 दिवसीय उत्तराध्ययन श्रुत देव आराधना का आरम्भ 30 सितम्बर को हुआ। इससे पूर्व आयोजित श्री श्रुतदेव भक्ति यात्रा में त्रयनगर तथा बाहरगाव से हजारों श्रावक-श्राविकाएं सम्मिलित हुए। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में श्रीमती कमलादेवी शेरमलजी बोहरा परिवार ने इस मंगल प्रसंग का लाभ लेते हुए भक्ति यात्रा का आयोजन किया। श्री आदि जैन मंडल के नेतृत्व में नवकारसी पश्चात प्रातः 8 बजे भक्ति यात्रा एस.वी. एस. जैन स्थानक, मारुति विथि, सिकंदराबाद से आरंभ हुई। अपूर्व भक्तियात्रा में डोली में श्री श्रुतदेव को लेकर बोहरा परिवार के सदस्य चल रहे थे। सैंकड़ों श्राविकाएं सर माथे पर श्री उत्तराध्ययन श्रुतदेव को लेकर शामिल हुयी। भक्ति यात्रा में शालेय विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। श्री अशोक, किशोर, राजेंद्र बोहरा परिवार रथ में सवार हुए। बोहरा परिवार के युवक चार घोड़े पर बैठ कर यात्रा की अगवानी कर रहे थे। उड़ान टीम के सैंकडों युवक-युवतियों ने प्रभु महावीर की जय जय कार से आसमंत गुंजित किया। 1 किलोमीटर चली यात्रा में त्रयनगर के सभी गणमान्य लोग उपस्थित रहे। त्रयनगर के सभी मंडल, महिला मंडल, युवक-युवती मंडल सम्मिलित हुए।

पॉट मार्किट, आर पी रोड, बायबल हाउस होते हुए भक्ति यात्रा 10:00 बजे आनंदतीर्थ समवशरण, टी 19 पहुंची। उड़ान टीम ने लेझीम तथा गरबा नृत्य प्रस्तुत कर सभी का स्वागत किया। श्री संघ के सभी पदाधिकारी आयोंजन में हर्ष उल्लाहास से सहभागी हुए। चेअरमैन श्री सम्पतराज कोठारी ने समारोह का संचालन करते हुए प्रतिदिन 7 से 10 बजे तक आयोजित 21 दिवसीय आराधना में सम्मिलित होकर धर्म लाभ लेने का आवाहन किया।

प्रेषक : सम्पतराज कोठारी

महासती पू. श्री सिद्धिसुधा जी म. 'श्रमणी गौरव' की पदवी से अलंकृत

राजगुरुनगर, पुणे (महाराष्ट्र) : राजगुरुनगर में विराजित परम पूज्य श्री सिद्धिसुधाजी म. सा. आदि ठाणा के चातुर्मास के दौरान पूज्य श्री गणेशीलाल जी म. की जन्म-जयंती का कार्यक्रम सौल्लास संपन्न हुआ। इस अवसर पर पू. श्री सिद्धिसुधाजी म. को राजगुरुनगर श्री संघ की ओर से **'श्रमणी गौरव'** पुरस्कार एवम्

सम्मान पत्र अर्पण किया गया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन तथा संघ के अध्यक्ष श्री संतोषजी बोथरा जैन, उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी गादिया जैन, श्री प्रदीपजी कासवा, श्री चंदनजी खारीवाल, श्री लालचंदजी कर्नावट जैन, श्री अजितजी लुणावत जैन, श्री विजयजी भंसाली जैन, महिला कोषाध्यक्षा सौ. सुनंदाजी भंसाली जैन तथा नवकार ग्रुप सदस्य भारी संख्या में उपस्थित थे।

प्रेषक : चंदन खारीवाल जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया के आत्मचरित्र 'संघर्षयात्रेची यशवंतगाथा' ग्रंथ का विमोचन संपन्न

पुणे (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन ने स्वयं पर आधारित आत्मचरित्र लिखा है, जिसका नाम **'संघर्षयात्रेची यशवंतगाथा'** रखा गया है। इस ग्रंथ का विमोचन अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. श्रीपालजी सबनीस के कर-कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाराष्ट्र राज्य के विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष भूतपूर्व शिक्षामंत्री माननीय श्री दिलीपरावजी वलसे पाटिल ने की। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, बंधुता प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री प्रकाशजी रोकड़े, प्रा. जे. पी. देसाई जी, पंचम ज़ोन महिला अध्यक्षा प्रो. सुरेखाजी कटारिया जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा सौ. सुनंदाजी भंसाली जैन तथा राष्ट्रीय मंत्री सौ. लताजी पगारिया जैन आदि उपस्थित थे।

महासती पू. श्री विपुलदर्शनाजी म., पू. श्री पावनदर्शनाजी जी म. एवम् पू. श्री मयूरदर्शनाजी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। श्री श्रेयसजी पगारिया जैन ने स्वागत किया तथा श्री प्रकाशजी रोकड़े ने प्रस्तावना रखी। डॉ. श्रीपाल सबनीस ने आत्मचरित्र पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा कर डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन ने जीवन में संघर्ष का सामना कैसे किया और सफलता कैसे पायी इसके बारें में अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि पगारियाजी ने अपने जीवन को हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा है, अपने जीवन की संघर्ष यात्रा के उनके आत्मकथन अंतःकरण से लिखी एक भावना प्रधान और प्रभावी साहित्य कृति है, यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक सिद्ध होगी। प्राध्यापक के रूप में कई सालों तक काम करने के बाद प्रा. पगारियाजी ने खुद का कॉलेज, स्कूल और अन्य संस्थाओं के जरिए गरीब और जरुरतमंद छात्रों को शिक्षा का अवसर उपलब्ध कराया है। दूसरों को आनंद देने, मदद करने जैसे सामाजिक सेवाव्रत के द्वारा उन्होंने कई संस्थाएं शुरु की। डायलेसिस सेंटर का निर्माण किया, उनका जीवन चरित्र उस जीवन का प्रांजल, प्रामाणिक औश्र भावना प्रधान कथन है, इसमें उन्होंने जिन उद्योगों में असफलता मिली, उन उद्योगों की जानकारी ईमानदारी से दी है, उनके बंधु के निधन का प्रसंग जिन शब्दों में लिखा है, उसे पढ़कर आंखों में आंसू आए बिना नहीं रहते, अपने माता-पिता, पत्नी और संपूर्ण परिवार का साथ, साधु-साध्वीजी के आशीर्वाद और दोस्तों की शुभकामनाओं के बारें में प्रभावी वर्णन इस किताब में है, इससे इस साहित्य कृति का साहित्य जगत में निश्चित रूप से स्वागत होगा। श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, प्रा. जे. पी. देसाई जी एवम श्री प्रकाशजी रोकड़े, श्री विलासजी पगारिया जैन,प्रो. सुरेखाजी कटारिया जैन ने प्रो. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन के जीवनी के बारें में वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के पंचम ज़ोन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री अभयजी संचेती जैन, श्री नितिनजी चोपड़ा जैन, श्री आदेशजी खिंवसरा जैन, श्री नेमीचंदजी सोलंकी जैन, श्री प्रकाशजी बोरा जैन, श्री प्रफुल्लजी कोठारी जैन, श्री सतीशजी बनवट जैन, श्री दिलीपजी नाहर जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री सागरजी

सांखला जैन, वैय्यावच्च समिति के राष्ट्रीय मंत्री श्री महावीरजी नाहर जैन तथा श्री सुरेशजी गादिया जैन, श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया जैन, श्री जवाहरजी भंडारी जैन, श्री संतोषजी बोथरा जैन, श्री प्रकाशजी गादिया जैन, श्री सुरेश जी धारीवाल जैन, सौ. सुनंदाजी भंसाली जैन, सौ. छायाजी मोदी जैन, सीए लहुराजजी गन्दे, डॉ. जवाहरजी भलगट, श्री संजयजी जैन, श्री राजेन्द्रजी धोका जैन, श्री लीनाजी कटारिया जैन, सीए वैभवजी मोदी जैन आदि महानुभाव उपस्थित थे।

प्रेषक : प्रो. प्रकाश कटारिया जैन

श्रुतदेव भक्तियात्रा में उमडा जन सैलाब

चेन्नई (तमिलनाडु) : नई दिल्ली स्थित महाराष्ट्र सदन में अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति की सभा में देश के 19 राज्यों के पदाधिकारियों व प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सुगन हाऊस, साहूकारपेट, चेन्नई शाखा के अध्यक्ष डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया को सर्वसम्मति से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। इस मौके पर एआईजेएमएफ की सुगन हाउस शाखा को सबसे बड़ी तथा सर्वश्रेष्ठ शाखा का सम्मान भी प्रदान किया गया। यह सम्मान शाखा कोषाध्यक्ष श्री सुभाष चोरड़िया ने ग्रहण किया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. चोरड़िया ने कहा कि हमें जरुरतमंद लोगों को रोटी की बजाय रोजी देने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने शाखा सचिव जी श्री सम्पत बागमार, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष चोरड़िया, उपाध्यक्ष श्री जयप्रकाश ललवाणी, राकेश खाबिया, हंसमुख रांका आदि के द्वारा प्रदत्त निष्ठापूर्ण सेवाओं की सराहना की।

प्रेषक : जी संपत बागमार

ज्ञानमुनिजी ने दी अमरेषमुनिजी को श्रद्धांजलि

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सैदापेट के तत्वावधान में आचार्य हस्ती-शिष्य श्रमणसंघीय संत रोचक व्याख्यानी श्री ज्ञानमुनिजी ने संत-कवि डॉ. अमरेशमुनिजी 'निराला' को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वयोवृद्ध पूज्य प्रवर्तक श्री रूपमुनिजी म.सा. 'रजत' की सन्निधि में ऐसे तेजस्वी-ओजस्वी संत के स्वर्गवास से क्या स्थिति बनी होगी, यह कल्पना से बाहर है। अमरेशमुनिजी की दिवंगति से मरुधरा के संत-जगत तथा श्रमण संघ में बड़ी क्षति हुई है। वे स्पष्ट वक्ता विद्वान संत थे। रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी की ओर से महासचिव डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया ने कहा कि पू. श्री अमरेशमुनिजी श्रेष्ठ साहित्यकार थे, इसलिए उनकी पावन स्मर्षति में साहित्य को बढ़ावा देने का कार्य होना चाहिये। पू. श्री लोकेशमुनिजी, पू. श्री आदीशमुनिजी, रिखबचंद सुराणा, महेन्द्र लुणावत आदि ने भी श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। औरंगाबाद में स्वर्गस्थ हुए पू. श्री संभवमुनिजी के गुण-स्मरण के साथ उन्हें भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग (एडवोकेट)

सेवा के क्षेत्र में काम करने वालों को मिला विशेष अवार्ड

लुधियाना (पंजाब) : भगवान महावीर सेवा संस्थान द्वारा सिविल लाईन्ज, कॉलेज रोड में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रसिद्ध समाज सेवी स्टेट अवार्डी डा. बबिता जैन को उनकी मानव सेवा एवं पर्यावरण संरक्षक के लिए, रीचा जैन महामंत्री-महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसाईटी को मानव सेवा एवं ध्यानयोगि डा. शिवमुनी जी म. की हीरक जयंती के उपलक्ष में पंजाब भर में **"76 आत्मा ध्यान साधना शिवर"** का आयोजन करवाकर अपना संकल्प सम्पूर्ण करने पर उन्हें इंदौर में आचार्य भगवन शिवमुनि जी म. द्वारा शांतिदूत की उपाधी से अलंकृत किया जाने पर डॉ. संजीव मेहता मैडिकल अफसर-विद्यावंती तरसेम लाल जैन चौरिटेबल डिस्पेंसरी नूरवाला रोड को उनकी दुखीः हृदय मानव सेवा के प्रति विशेष सेवाओं के लिए सभी को विशेष अवार्ड दिया गया। संस्थान के संस्थापक प्रधान राकेश जैन ने बताया संस्थान के प्रबंधक डॉ. प्राण गुप्ता पिछले 15 वर्षो

से जरुरतमंद मरीजों की सेवा के लिए अपनी निःशुल्क सेवाएं दे रहे हैं ये हमारे संस्थान की रीड़ की हड्डी हैं। संस्थान को इनके द्वारा जरुरतमंद मरीजों को फ्री दवाईयाँ देने की सेवा ली हुई है वे इस सेवा से अपने आप को गौरव का अनुभव करते हैं इसी लड़ी को आगे बढ़ाते हुए संस्थान द्वारा 2007 में प्रथम उत्तर भारत में फ्री पोलियो ऑप्रेशन करवाने वाली संस्था के मुख्य चीफ सर्जन डॉ. पवन ढींगरा की सेवायें निरंतर जारी हैं उनकी सेवायों को देखते हुए भूतपूर्व मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंह बादल के साथ-साथ पंजाब सरकार के कई मंत्रियों ने उन्हें सम्मानित किया। डॉ. ढींगरा द्वारा आज सैंकड़ों नहीं हजारों पालियों ग्रस्त मरीज अपने पांव पर खड़े हो चुके हैं इसका सारा श्रेय डॉ. पवन ढींगरा एवं उनकी टीम को जाता है इस मौके पर भगवान महावीर सेवा संस्थान के उप-प्रधान राजेश जैन, सुनील गुप्ता, पैटरन सतीश जैन, सुरेश जैन, सन्नी जैन, अंकित जैन, कविता जैन, रजनी जैन, विधुशी जैन, दिपांशु जैन, रमा जैन, संदीप जैन, डॉ. अवदेश सिंह, राकेश जैन आदि अन्य उपस्थित थे।

प्रेषक : राकेश जैन

क्रोध स्वयं की क्षति करता है - उपप्रवर्तक डॉ. सुभाष मुनि जी म.

रतलाम (मध्य प्रदेश) : क्रोध का होना करना दुखदायी होकर यह हमें हर तरह से नुकसान पहुंचाता है। सांसारिक समाज व्यवस्था में व्यक्ति को विभिन्न कारणों से क्रोध आ जाता है क्रोध भी सज्जनता भराहो, जो जल के ऊपर खिंची रेखा के समान हो, जो शीघ्र ही विलुप्त हो जाता है। व्यवहारि भाषा सही हो सकता है किन्तु क्रोध करने का मतलब है दूसरों की गलतियों का स्वयं से प्रतिशोध लेना। इसलिए हमें क्रोध से बचना चाहिए। अहमदाबाद के उपनगर मणीनगर, स्थानक में वर्षावास कर रहे श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. डॉ. श्री डॉ. सुभाषमुनि जी म. ने अपने नियमित व्याख्यान सभा में उपरोक्त उद्बोधन दिया। धर्मसभा को तपस्वीराज धीरजमुनि जी म. ने भी सम्बोधित किया। संघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी के अनुसार उप-प्रवर्तक मुनि जी पू. श्री प्रदीप मुनि जी म. आदि ठाणा 3 सुखशांति से विराजित है। रतलाम से उनका स्वास्थ्य लाभ पूछने व दर्शनार्थ गए श्री एस.सी कटारिया ने बतायाकि पू. प्रदीप मुनि जी मत्र के मुंह के पास की शल्य चिकित्सा होने के पश्चात उनका स्वास्थ्य प्रगति पर होकर सुख शाता में है।

प्रेषक : आर सी कटारिया

विश्वमैत्री एवं क्षमापना दिवस समारोह

नई दिल्ली : दिल्ली करनाल रोड पर स्थित आत्मवल्लभ परिसर में शांतिदूत, गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रद्वेय पू. श्री नित्यानंद जी म. के पावन सान्निध्य में संक्रांति महापर्व एवं गुरु वल्लभ जी की 63 वीं पुण्य तिथि के अवसर पर जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा दिल्ली द्वारा विश्वमैत्री एवं क्षमापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश के कोने-कोन से गुरु वल्लभ भक्त, श्वे. मूर्तिपूजक समाज के मूर्धन्य नेता तथा जैन समाज के सभी वर्गों के वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे।

अपने मंगल उद्बोधन में आचार्य श्री नित्यानंद सूरीश्वर जी म. ने कहा कि मैत्री एवं क्षमा शांति तथा विकास के आधार हैं। जीवन में गलती न हो यह श्रेष्ठ है, लेकिन व्यवहारिक जीवन में जाने-अनजाने में भूलें होती हैं। उन भूलों को स्वीकार करके क्षमा मांग लेना व्यक्ति और समाज के जीवन में सौहार्द पैदा करता है। समारोह अध्यक्ष एवं जैन महासभा के संरक्षक श्री राजकुमार ओसवाल ने कहा कि क्षमा मन को निर्मल करती है लेकिन हमें इसे केवल वार्षिक अनुष्ठान नहीं, अपितु अपने दैनिक जीवन का व्यवहार बनाना चहिए। तेरापंथ समाज के मूर्धन्य नेता श्री मांगीलाल सेठिया ने कहा कि पूरी दुनिया क्षमा के महत्व को स्वीकार करती है लेकिन क्या हमारा अपना समाज भी इसकी ताकत के प्रति समर्पित है?

दिगम्बर समाज के नेता तथा पंजाब केसरी के कार्यकारी प्रधान श्री स्वदेश भूषण जैन ने कहा कि हम अपनी-अपनी मान्यताओं के प्रति दृढ़ रहकर भी जैन एकता को मजबूत कर सकते है। इसके लिए आवश्यक

है कि हम अपनी परम्परा और पूजा स्थलों से बाहर अपने को केवल जैन मानें औरअपने को जैन कहें। हमें 'बहस' की जगह चर्चा और संवाद को प्राथमिकता देनी चाहिए। समारोह के मुख्य संयोजक तथा जैन सभा - दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कहा कि जैन धर्म शायद एकमात्र ऐसी संस्कृति है, जिसमें क्षमा, तप और मृत्यु को भी महोत्सव के रुप में मनाया जाता है। हमने अहिंसा परमोधर्म का जयघोष किया। लेकिन जब यू.एन.ओ. ने 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस घोषित किया तो उसके साथ प्रभु महावीर का नहीं अपितु महात्मा गांधी का नाम जुड़ा, जिन गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन पर जैन संतों, श्रावकों और नियमों के प्रभाव को प्रभावी ढंग से वर्णित किया। इस चूक का परिष्कार यह है कि 'क्षमावाणी' को विश्व दिवस के रूप में घोषित करवाने का प्रयास करें।

समारोह में दिल्ली के जैन समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों के रुप में श्वे. पूर्तिपूजक समाज के मूधन्य राजकुमार जैन एन.के. नरेंद्र कॉस्को, दिनेश दोसी, मयूर दोसी, शुभकांत जैन, अशोक जैन, दीपक जैन के साथ महासभा के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सर्व श्री ईश्वर चंद जैन 'भामू', बिमल सुराणा, नरेश खींवेसरा, विजय जैन प्रधान पीतमपुरा, अनिल जैन महामंत्री पीतमपुरा इत्यादि भी सम्मिलित हुए।

प्रेषकः जय भगवान जैन

चतुर्थ सामूहिक नवकार जाप कार्यक्रम भव्य उपस्थिति के बीच सोल्लास सम्पन्न

दिल्ली : दिल्ली क्षेत्र में प्रति माह के अंतिम रविवार को निरंतर मासिक स्तर पर आयोजित किए जा रहे सामुहिक नवकार जाप कार्यक्रम को समस्त दिल्ली वासियों द्वारा भव्य रूप से प्रतिसाद प्राप्त हो रहा है। समाजजनों के एकीकरण, नवकार मंत्र जाप की महत्ता को निरन्तरता तथा विशेष रूप से युवा वर्ग की ऐसे आयोजनों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की भावना के चलते अक्तूबर 2017 माह के चतुर्थ सामूहिक नवकार जाप का आयोजन जैन स्थानक, सैक्टर-7, रोहिणी में लगभग 200 बहन-भाईयों की उत्साहवर्द्धक उपस्थिति के बीच किया गया। अक्तूबर 2017 माह के लाभार्थी श्री राजेश जैन-रजनीश जैन सुपुत्र स्व. श्री लालचन्द जी जैन (अहीरमाजरा) परिवार द्वारा आयोजन की व्यवस्था बड़े ही व्यवस्थित एवं सुन्दर रूप से रही। इस आयोजन में जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकान्त 'पिन्टू' कर्नावट जी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री अमितरायजी जैन के अलावा श्री रमेशजी जैन (काहनी), संरक्षक श्री रोशनलाल जी जैन, सै.-7, रोहिणी श्रीसंघ के प्रधान श्री धर्मवीर जी जैन व महामंत्री श्री महावीर जी जैन, श्री दिनेश जी जैन (चाँदनी चौक), श्री राजेश जी बंसल, श्री मोहित जी जैन (सदर बाज़ार), श्री राजेश मिश्रा आदि की उपस्थिति जहाँ भव्य रूप से रही वहीं जपो नवकार ग्रुप के मुख्य संयोजक श्री संजय जी जैन (पंजाबी बाग), संयोजक श्री प्रशान्त जी जैन (गंधरवाल), श्री अशोक कोठारी जी जैन, श्री ललित ओसवाल जैन आदि ने भी इस आयोजन में पधारने वाले समस्त महानुभावों का हार्दिक स्वागत किया। इस भव्य जाप का संचालन श्री सहदेव जैन द्वारा किया गया।

प्रेषक : सहदेव जैन

जैन दिवाकर संयम और त्याग की प्रतिमूर्ति थे – साध्वी संयमलता
जैन दिवाकरजी की 140वीं जन्म जयंती में देश के कोने-कोने से उमड़ा जन सैलाब'

बाणावार (कर्नाटक) : श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बाणावार के तत्वाधान में श्रमण संघीय जैन दिवाकरीय महासाध्वी पू. श्री संयमलताजी म., पू. श्री अमितप्रज्ञाजी म., पू. श्रीकमलप्रज्ञाजी म., पू. श्री सौरभप्रज्ञाजी म.आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में हनुमान व्यायाम शाला के विशाल प्रांगण में आयोजित

जगत वल्लभ जैन दिवाकर, पू. गुरुदेव श्री चौथमलजी म. 140वीं जन्म जयंती समारोह भारत के कोने-कोने से पधारे गुरुभक्तों के मध्य भारी उमंग व उत्साह के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। विशाल वरघोड़े के साथ शोभायात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हुई।

मंगलाचरण के पश्चात दिवाकर चालीसा का सामूहिक गान हुआ। अपने प्रभावशाली उद्‌बोधन में महासाध्वी पू. श्री संयमलताजी म. ने कहा जैन दिवाकर संयम और त्याग के प्रतिमूर्ति थे। जैन दिवाकर शक्ति के पुंज थे। अहिंसा, जीवदया, शाकाहार, सदाचार, व्यसनमुक्ति और एकता के क्षेत्र में जैन दिवाकर श्री चौथमलजी न. का नाम अमर रहेगा। श्रमण संघ की एकता के लिए आचार्य पद को नही स्वीकारा। आपके जीवन का अद्‌भुत संयोग रहा जन्म, दीक्षा, अंतिम प्रवचन और निर्वाण सभी शुक्ल पक्षीय रविवार को हुआ। जैन दिवाकरजी जहाँ जाते थे वहाँ मेला लग जाता था। अपने प्रवचन के मध्य कई ऐसे चमत्कारिक प्रसंग सुनाये जिन्हें सुनकर जनता चकित रह गई। जैन दिवाकर सभी के लिये प्रेरणा स्त्रोत है। महासती पू. श्री अमितप्रज्ञाजी ने संस्मरण सुनाते हुये कहा की जैन दिवाकर ने सेवा भाव से सभी को अपना बनाया। कई अजैनों को भी जैन बनाया। यदि व्यक्ति राई जितना भी करुणा दिखाये, तो उसके सामने बड़ी-बड़ी शक्तियाँ झुक जाती है। महासती पू. श्री कमलप्रज्ञा जी म. ने 'दिवाकर गुरु का जयकारा' गीतिका प्रस्तुत करते हुये तमाम श्रद्धालुजनों के दोनों हाथो को आकाश की और उठाकर सभा को गुरुमय कर दिया। महासती पू. श्री सौरभप्रज्ञाजी ने 'जैन दिवाकर आज कठे' गीतिका से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अखिल भारतीय जैन दिवाकर संगठन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पन्नालालजी कोठारी जैन ने दिवाकरजी के जीवन पर प्रकाश ड़ालते हुये कहा वे ऐसे सूर्य है, जिसका प्रकाश सभी को मिलता है। जैन दिवाकरजी के पास राजा और रंक सभी आते थे। राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष श्री रमेशजी पुनमिया जैन, श्री किशनलाल जी परमार जैन मेवाड़ संघ गोरेगाँव, श्री भेरुलाल लोढ़ा अध्यक्ष भायंदर, श्री हंसराजजी कोठारी हैदराबाद, श्री कमलेश बोरदिया भिवंडी, सौ. मंजू पालरेचा धारावी, नेहा बाफना जैन भायंदर, पंकज रांका हैदराबाद, मोक्ष मार्ग संपादक श्री गौतमी ओस्वाल, श्री शांतिलालजी मेहता शीमोगा, श्री चेतन भलगतजी अरसिकेरे; श्री अशोकजी तातेड हैदराबाद, श्रीपारसजी चपलोत भायंदर ने अपने विचार व्यक्त किये। शांतिलालजी बम्बोरि पलघर ने अपनी कविता से सभा को हास्यमय बना दिया। चंद्रेश ठाकुरगोता, अखिलेश जैन ने 'जैन दिवाकर प्यारे' गीतिका गाकर जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इसी क्रम में पदमावती महिला मंडल-बाणावार से सौ. सरिता बोहरा, सौ. हेमा बोहरा, सौ. टीना बोहरा, सौ. प्रेमा कांकरिया, सौ. भारती बोहरा, सौ. रेखा बोहरा ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कन्या मंडल-बाणावार ने 'जग घुमिया गुरु जैसा ना कोई' गीतिका प्रस्तुत की। शांतिनगर संघ, बंगलौर ने वर्ष 2018 के चातुर्मास की पुरजोर विनती रखी। मुंबई से 175 यात्रियों को हवाई यात्रा से संघ लेकर पधारने पर संघपति पारसजी चपलोत परिवार का, हैदराबाद से 199 यात्रियों को रेल से संघ लेकर पधारने पर हैदराबाद निवासी पंकजजी रांका परिवार का एवं शीमोगा से 100 यात्रियों का संघ लेकर पधारे दिनेशजी जीरावला परिवार का बाणावार संघ द्वारा माला-साफा,चुनरी एवं प्रतीक चिन्ह द्वारा स्वागत सम्मान हुआ।

संपूर्ण चातुर्मास के गोतम प्रसादी के लाभार्थी स्व. मिश्रीमलजी सों. कमलाबाई, सुपुत्र कान्तिलालजी-प्रेमजी, जयंतीलालजी-हेमलताजी, मनोहरजी-लीलाजी, सम्पतजी-विजयश्री, नरेन्द्रजी-सीमाजी, हेमन्तजी-चेतनाजी, प्रदीपजी-टीनाजी बोहरा परिवार का श्री संघ द्वारा माला-चुनरी-प्रतीक चिन्ह द्वारा स्वागत सम्मान सम्पन्न हुआ। 'जग में चमके जैन दिवाकर' के गगनभेदी जयनादो से विशाल प्रांगण गुंजायमान हो गया।

गुरु दिवाकर जी के जीवन पर आधारित भव्य चित्र प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। समारोह में आमिरपेट संघ अध्यक्ष श्री हंसराज कोठारी, मंत्री श्री अशोकजी तातेड, अहमदाबाद से श्री बसंतीलालजी वडालमिया, श्री एकलिंगजी लोढ़ा मुंबई मेवाड़ संघ, किशनजी परमार, श्री नरेश लोढ़ा, श्री सुरेश बोहरा भिवंडी, श्री नरेश पालरेचा धारावि, श्री मोतिलाल पालरेचा कल्याण, श्री प्रदीप लोढ़ा बोईसर, अजरामल संघ, मीरारोड अध्यक्ष श्री पीयूषजी केन्या, श्रीमती आशा देवी उमरावजी ओस्तवाल, हरदा सकल जैन समाज के अध्यक्ष श्री रुपचंदजी बनवट, एरागडा यूथ क्लब अध्यक्ष श्री ललितजी रांका, मंत्री श्री नवीनजी कवाडिया, आपका सखा अध्यक्ष श्री अनिल कोठारी, मंत्री श्री महावीर कोठारी, श्री नानक प्राज्ञ संघ श्री भोपाल सिंह कावडिया, सर्वश्री जी सज्जननाबेडा, श्री महेंद्र तातेड, श्री सुभाष नाहार, श्री अशोक तातेड, श्री शैलेन्द्र बाबेल, श्री अशोकजी बाबेल, भेरुलालजी मुणोत, भारत श्रीश्रीमालजी टिपटुर, श्री महावीर बोहरा अरसिकेरे, श्री मोहन मेहता शीमोगा, नरेंद्र तातेड भद्रावती, मांगीलालजी पुनमिया सूरत उपरोक्त के अलावा बंगलौर, चेन्नई, मैसर, दावानगिरी, हासन, बेलुर, चित्रदुर्गा, जोधपुर एवं अनेक संघो से प्रतिनिधि उपस्थित होकर समारोह का गौरव बड़ाया। समारोह का संचालन महासती पू. श्री संयमलताजी म. ने किया। संघ अध्यक्ष किशोर बोहरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया, संघ मंत्री श्री मानकचंदजी सोलंकी ने आभार व्यक्त किया । **प्रेषकः किशोर बोहरा**

गाय की रोटी का इंतजाम आस्था रोस्टी बैंक एटीएम का शुभारंभ

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : क्लर्क कालोनी की कु. आस्थाजी जैन द्वारा गाय की रोटी के लिए आस्था रोटी बैंक की स्थापना की गई है। गाय है नहीं, कुत्ते खाते नहीं, रोटी तो निकलती है, इसका क्या किया जाए। यही विचार गुजराती कॉलेज में पढ़ रही कु. आस्थाजी जैन के मन में खटकता था। इसी का रास्ता निकालते हुए उसने घर के बाहर कपड़े की थैली टांगी और आस-पास वालों से बाहर ओटले पर रोटी रखने के बजाए इसमें जमा करने को कहा। रोटियों की संख्या बढ़ने पर आस्था रोटी बैंक एटीएम मशीन लगा दी है, जो जल्द ही कई कालोनियों में लगेगी। जमा रोटियाँ गौशाला भेजी जाएगी। आस्था जैन की इस पहल को लोढ़ा भाईपा संघ, जे.एस.एस. जी अरिहंत ग्रुप के साथ ही अनेक संगठनों का समर्थन भी प्राप्त हो रहा है। इसी श्रृंखला में चार एटीएम शहर में लग चुके हैं।

पाँचवा एटीएम स्व. श्री कानसिंहजी लोढ़ा की स्मृति में श्रीमती महावीरजी लोढ़ा जैन, श्री दीपेश शिल्पा जी लोढ़ा द्वारा रणजीत हनुमान मंदिर के सामने लब्धि श्री कलेक्शन पर आस्था रोटी बैंक की सीईओ आस्था जैन, जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप स्वास्तिक के संरक्षक क्षेत्रीय पार्षद श्री भारतजी पारख, श्री प्रभातजी चोपड़ा जै, श्री प्रदीपजी माण्डोत जैन, श्री शैलेष जी कोठारी जैन, श्री प्रितेशजी खाबिया जैन, श्री पंकज जी गादिया जैन, लोढ़ा भाईपा संघ के अनिलजी लोढ़ा, नाकोड़ा की पुकार के प्रबंध सम्पादक श्री अनिलजी जैन के कर-कमलों से शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर श्री नरेन्द्रजी भटेवरा जैन, श्री मानसिंहजी लोढ़ा जैन, श्री सुनीलजी चौधरी, श्री राजेशजी लोढ़ा जैन, श्री दिलीपजी लोढ़ा जैन, सौ. अनिताजी लोढ़ा जैन, सौ. प्रेमलताजी बरड़िया जैन आदि गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार सौ. शिल्पाजी लोढ़ा ने व्यक्त किया। **प्रेषक : आस्था जैन**

पेज क्रमांक 35 में प्रकाशित समाचार के संबंध में भूल सुधार ...

1. समाचार में गलती से 29 दिसम्बर प्रकाशित हुआ है, उसे 29 अक्टूबर को समाचार समझा जाए।

1. श्री सुशील जैन के नाम के साथ राष्ट्रीय मंत्री पढ़ा जाये।

2. श्रीमती रेणु जैन को उत्तर प्रदेश प्रांतीय महिला शाखा अध्यक्षा संबोधित किया गया है, जबकि वे गाजियाबाद एस.एस. जैन सभा की महिला अध्यक्षा है, ऐसा समझा जाये।

3. समाचार के अंत में प्रभावना वितरण के के रूप में बैग के वितरण के विषय में लिखा गया है, जोकि गलत है, ऐसी कोई प्रभावना वितरित नहीं की गई है। **- प्रधान सम्पादक**

शोक समाचार

कवि पूज्य डॉ. श्री अमरेश मुनि जी म. निराला का संथारा सहित देवलोक गमन
देशभर में शोक श्रद्धांजली एवं गुणानुवाद सभाओं का आयोजन

नई दिल्ली : दिव्य साधक कवि पूज्य डॉ. श्री अमरेश मुनि जी म. का पंडित मरण संथारा संलेखना दिनांक 13 अक्टूबर 2017 को जोधपुर में हो गया। उनके देवलोक गमन से पूरे जैन समाज में शोक की लहर छा गई। समाचार मिलने पर जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, चेयरमैन विश्वस्त मण्डल श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री विमलजी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, श्री महेन्द्रजी पगारिया जैन, राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष श्री नेमीचंदजी धाकड़ जैन, तमिलनाडु प्रांतीय अध्यक्ष श्री आनंदजी छल्लानी जैन आदि ने पहुंचकर पूज्यवर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। देशभर में श्रद्धांजली सभा एवं गुणानुवाद सभाओं का आयोजन किया गया।

जोधपुर (राजस्थान) : महावीर कॉम्पलेक्स में युवा प्रज्ञ डॉ. अमरेश मुनि जी म. 'निराला' की गुणानुवाद सभा में बोलते हुए वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य श्री रूपमुनि जी म. 'रजत' ने कहा कि काल चक्र घूमता रहता है, पता नहीं किस समय मृत्यु आ जाए इसलिए सजगता के साथ धर्म क्रिया करते रहना चाहिए। अमरेश मुनि जी ने तन-मन से ज्ञान अर्जन किया और कई ग्रंथ व पुस्तकों का लेखन किया। उनके जैसा प्रवक्ता व कार्यक्रम संचालक वर्तमान साधुओं में नजर नहीं आता। उप-प्रवर्तक पू. श्री सुकन मुनि जी म. ने कहा कि उनकी प्रवचन शैली गजब की थी। निराला मुनि स्थानकवासी संघ के मुनिवृंदों में कवि के नाम से मशहूर थे। अजब-गजब की धार्मिक

कविताओं के कारण उन्हें निराला की उपाधि प्रदान की गई थी। तपस्वी पू. श्री अमृत मुनि जी म. ने श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म., उपाध्याय, महामंत्री, प्रवर्तक, सलाहकार आदि मुनिराज के साथ ही देश के सभी संप्रदायों के साधु-साध्वीवृंद के संवेदना पत्र पढ़कर सुनाए। इस अवसर पर तय किया गया कि अमरेश मुनि जी म. की अंतिम भावना को साकार रूप देने के लिए पू. श्री सुकन मुनि जी म. की प्रेरणा से 25 लाख रुपये गोशालाओं में दिए जाएंगे और जैतारण में अनाथालय बनवाने की योजना के क्रियान्वयन पर भी विचार-विमर्श किया गया। जोधपुर में अमरेश मुनि स्मृति भवन बनाने के लिए कार्यकारिणी सदस्यों का चयन किया गया।

इस अवसर पर श्रद्धांजलि सभा में खवासपुर, बैंगलोर, चेन्नई, हैदराबाद, दिल्ली, सूरत, पाली, उदयपुर सहित अन्य शहरों से श्रद्धालुओं ने भाग लिया। जैन गौरव समिति, तपागच्छ संघ, वागर्थ संस्थान आदि की ओर से श्रद्धांजलि दी गई तथा अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने डॉ. अमेरश मुनि जी म. को याद किया।

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : गुरु मिश्री-रूप-सुकन के परिवार का एक अनमोल हीरा खो गया। पूज्य श्री अमरेश मुनि जी म. ओजस्वी वक्ता एवं आशु कवि थे। आपने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों पर आधारित अनेक कविताएं लिखी। आपकी हिन्दी और राजस्थानी रचनाएं एक अमूल्य धरोहर के रूप में सदैव याद की जायेगी। अर्चना महासती मण्डल दुःख की इस विकट घड़ी में प्रवर्तक पूज्य श्री रूपमुनि जी म., उप-प्रवर्तक पूज्य श्री सुकन मुनि जी म. एवं पूज्य श्री अमृतमुनि जी म. आदि के प्रति हार्दिक संवेदना पूर्वक इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। राजस्थान प्रवर्तिनी पूज्य डॉ. श्री सुप्रभाजी म. 'सुधा' की आज्ञा से डिम्पल जी लोढ़ा जैन । **प्रेषक : संजीव नाहटा जैन**

मदुरान्तकम (तमिलनाडु) : मदुरान्तकम नगर में 15 अक्टूबर को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम जाप, प्रार्थना, शांतिजाप, लोगस्स आदि के पाठ किए गए। वे स्पष्ट वक्ता, कुशल मंच संचालक, गौ-प्रेमी, दबंग व्यक्तित्व, ओजस्वी वक्ता, बेटी बचाओ अभियान प्रचारक, वर्तमान को अपनी कलम से बयां करने वाले आदि अनेक गुण उनमें थे। मुदरान्तकम श्रीसंघ की ओर से वरिष्ठ श्रावक प्रकाशचंदजी छल्लाणी जैन, श्री सुरेशचंदजी कांकलिया जैन, श्री प्रफुल्ल कुमारजी कोटेचा जैन, श्री निकालजी जैन, श्री चेतनजी जैन, श्री कमलजी जैन, श्री मनोहर कुमारजी लोढ़ा जैन आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : प्रफुल्लकुमार कोटचा

अजमेर (राजस्थान) : श्रमण सूर्य पूज्य प्रवर्तक भीष्म पितामह पूज्य गुरुदेव श्री मरुधर केशरी श्री मिश्रीमल जी म. के पौत्र शिष्य लोकमान्य संत शेरे राजसथान पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री रूपचंद जी म. 'रजत' एवं श्रमण संघीय सलाहकार उप-प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री सुकनमुनि जी म. के अंतेवासी सुशिष्य श्रमण संघ की आन-बान-शान एवं युवा प्रज्ञ, कवि प्रवक्ता डॉ. श्री अमरेश मुनि जी म. 'निराला' के संथारापूर्वक आकस्मिक देवलोक गमन के समाचार सुनकर हृदय को अत्यंत आघात लगा। इस क्षति को पूर्ण करना अत्यंत दुर्लभ कार्य हैं। अपने संयमी जीवन में आपने गुरु मिश्री-रूप-सुकन की सेवा में अपना पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। परम विदुषी, महासती पू. श्री इन्दूप्रभा जी म. 'श्रद्धा', साध्वीरत्ना पू. डॉ. श्री दर्शनप्रभा जी म., पू. डॉ. श्री समीक्षाजी म. आपकी आत्मा को परम शांति एवं अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति हो ऐसी कामना करते हैं।

प्रेषक : इन्दू-दर्शन-समीक्षा

जयपुर (राजस्थान) : श्रमण संघ के उदयमान नक्षत्र, श्रमण सूर्य परम्परा के स्तम्भ, गुरु भगवंतों के नयन सितारे, गुरु मिश्री-रूप-सुकन,अमृत की आशाओं के जलते दीपक, मरुधरा में जन्में मरुधरा की माटी के सपूत युवा हृदय कवि श्री अमरेश मुनि जी म. 'निराला' के आकस्मिक देवलोक गमन से हृदय को गहरा आघात लगा। यथा नाम ताि गुण अमर संत वास्तव में निराला ही साबित हो गया। हम सभी उस आत्मवीर संत को नमन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि ऐसा व्यक्तित्व फिर किसी गौरवशाली माँ की कोख से जन्म लेकर प्रकाशमान हो तथा हम सभी भक्तों के हृदय स्थल में स्मृति स्वरूप सदा के लिए विराजमान होकर हमे खो जाने की शक्ति सहन करने की ताकत प्रदान करें। जयपुर के श्रद्धालु भक्त संत पुरुष को याद करते हुए श्रद्धांजलि प्रकट करते है। गुरु भगवंत हमें इस घड़ी में वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करेंगे।

प्रेषक : उत्तमचंद डागा जैन

दानवीर सेठ भामाशाह श्रीमान् रसिकलालजी धारीवाल जैन का देवलोक गमन

जैन कॉन्फ्रेंस में लम्बे समय तक विभिन्न पदों पर रहकर की समाजसेवा

पुणे (महाराष्ट्र) : पुणे, घोड़नदी निवासी परम दानवीर, भामाशाह, श्रेष्ठीवर्य जैन कॉन्फ्रेंस के मार्गदर्शक श्रीमान् रसिकलालजी धारीवाल जैन का दिनांक 24 अक्टूबर 2017 की रात्रि में अकस्मात निधन हो गया। यह समाचार संपूर्ण जैन समाज में फैलते ही शोक की लहर छा गई। ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक साया सर पर से उठ गया हो। श्री रसिकलालजी धारीवाल जैन ने अपनी धनलक्ष्मी को दोनों हाथों से दान करके धर्म एवम् समाज के सभी वर्गों में बराबर बांटा, चाहे वह जैन धर्म का कोई भी कार्य हो, जिसमें कई सालों से करोड़ों रुपये की बड़ी धनराशि प्रतिवर्ष लगातार दान की है।

मुंबई, पुणे, कात्रज, वणी तीर्थ, सापुतारा तीर्थ, नासिक आदि महाराष्ट्र के अनेक धर्म स्थानों में मुख्य रूप से आपके द्वारा ही कार्य कराए गए। पालीताणा, शंखेश्वर में नगर विकास, पालीताणा में हॉस्पिटल निर्माण, वागलधरा में कैन्सर चिकित्सा संकुल में महान कार्य का लाभ आपने लिया। अनेक समुदायों में सभी सातों क्षेत्र, ज्ञानशाला, मंदिर, उपाश्रय, स्थानक तथा आदि धर्म समाज के सभी वर्गों में कॉन्फ्रेंस से लम्बे समय से जुड़कर समाजसेवा का दायित्व बखूबी निभाया।

अनेक तीर्थों के जीर्णोद्वार में का मुख्य लाभ भी आपने लिया तथा तथा हाल ही में श्री जीरावला तीर्थ जैन समाज के चारों फिरकों में जीवदया, अनुकंपा, साधर्मिक भक्ति, अनेक स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल प्रमुख लाभ आपने लिया। जैन विभिन्न पदों पर रहते हुए आपने लाभ तथा अनेक नगरों में प्रवेशद्वार ऐसे अनेक क्षेत्र जैसे राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, दिल्ली एवम् साउथ के क्षेत्रों में अनेक धर्म स्थानों में बड़ी राशि दान देकर भामाशाह की उपाधि प्राप्त की। आप सदैव सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर रहे। यही नहीं अन्य धर्मियों के साथ भी सहकार पूर्ण कार्य आपने किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक स्कूल, कॉलेज आदि निर्माण आपने करवाया है तथा अनेक ज़रुरतमंद विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की, अनेकों स्कॉलरशिप जैसी योजनाओं में भाग लिया। ऐसे मानवता के मसीहा का दुःखद निधन समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। आपके अंतिम दर्शन तथा श्रद्धाजंलि देने के लिए देशभर के कोने-कोने से लोगों ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री नंदकुमारजी भटेवरा जैन, श्री विलासकुमारजी पगारिया जैन, श्री मनसुखजी गुगले जैन, श्री नेमीचंदजी सोलंकी जैन, श्री अभयजी संचेती जैन, श्री जे.सी. भण्डारी जी जैन, श्री महावीरजी नाहर जैन, श्री प्रफुल्लजी कोठारी जैन, पंचम ज़ोन अध्यक्ष श्री कांतिलालजी बोथरा जैन, मार्गदर्शक श्री भंवरलालजी फुलफगर जैन आदि ने पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की। आपके जाने से सकल समाज में शोक की लहर छा गई है। आपकी इस तेजोमय आत्मा की शांति के लिए हम वीर प्रभु से मंगल कामना करते हैं।

प्रेषक : पारस मोदी जैन

धर्मनिष्ठ सौ. शांताबाईजी जैन देवलोक गमन

रायचूर (कर्नाटक) : धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, सामायिक-स्वाध्याय आराधक सौ. शांताबाईजी जैन धर्मपत्नी श्री सौभाग्यराज भण्डारी का 68 वर्ष की आयु में दिनांक 3-10-2017 को स्वर्गवास हो गया। अत्यंत

सरल स्वभावी एवं धर्म भीरू थी। प्रतिदिन तीन-चार सामायिक स्वाध्याय के साथ करती थी तथा सायंकाल नियमित रूप से प्रतिक्रमण करती थी। अपने जीवनकाल में उन्होंने 21, 15,09,08 आदि अनेकों प्रकार की तपस्याएं की थी। वे प्रतिवर्ष आयम्बिल ओली तप की आराधना करती थी। वे गुरु हस्ती, गुरु हीरा एवं गुरु मान की परम भक्त थी। संत-सत्संग स्वयं तो करती ही थी परिवार के सदस्यों को भी साथ लेकर उन्हें भी धर्म आराधना के लिए प्रोत्साहित करती थी। विहार में संत-सतियों की सेवा प्रदान करने में तत्पर रहती थीं। दक्षिण सिंहणी, प्रबल व्याख्याता महासती पू. श्री प्रतिभीकंवर जी म आदि ठाणा के सान्निध्य में शोक सभा का आयोजन दिनांक 5-102-17 को किया गया और स्वर्गस्थ आत्मा को श्रद्धांजलि दी गई।

प्रेषक : सौभागराज विजयराज भंडारी

मरनोपरांत सौ. रतनबाईजी जैन बोकडिया का नेत्रदान

बदनावर (मध्य प्रदेश) : धर्मप्रेमी सुश्राविका सौ. रतनबाई जी जैन बोकडिया धर्मपत्नी स्व. श्री छगनलाल जी का स्वर्गवास 06-10-2017 शुक्रवार को हो गया। परिवार द्वारा गीता भवन हॉस्पीटल ट्रस्ट बडनगर से सम्पर्क कर दिवंगत सौ. रतनबाईजी जैन के नेत्रदान का संकल्प व्यक्त किया। तदनुसार डॉक्टरों की टीम ने सफल नेत्रदान करवाया। श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघ में विराजित पूज्य संत एवं पूज्या महासतियों एवं श्रावकों द्वारा गुणानुवाद किया गया। ट्रस्ट द्वारा परिवार को नेत्रदान का प्रशस्ति-पत्र भेंट किया।

प्रेषक : आतिश जैन

त्याग की भावना

महाकवि माघ उन दिनों आर्थिक संकट से गुजर रहे थे। परिवार का पालन-पोषण मुश्किल से हो पा रहा था। एक दिन वह काव्य रचना में जुटे थे कि एक निर्धन ब्राह्मण उनके पास आया और अपनी पुत्री के विवाह के लिए आर्थिक सहायता की याचना करने लगा। माघ ने घर में चारों तरफ नजर दौड़ाई पर ऐसी कोई वस्तु नजर नहीं आई जो ब्राह्मण को दी जा सकती है। यह सोच ही रहे थे कि उनकी जनजर चारपाई पर सो रही अपनी पत्नी पर पड़ी। पत्नी के हाथों में सोने के कंगन थे। माघ ने चुपचाप पत्नी के एक हाथ से कंगल निकाल लिया और ब्राह्मण को देने ही वाले थे कि पत्नी की आंख खुल गई पत्नी भी बहुत बुद्धिमान थी। उसे स्थिति समझने में देर नहीं लगी। उसने तुरन्त दूसरे हाथ का कंगन उतारा और पति को देकर बोली – 'स्वामी, निर्धन ब्राह्मण का काम केवल एक कंगन से नहीं चलेगा, उसे ये दोनों कंगन दे दो।' माघ त्याग की इस भावना पर प्रसन्न हुए और उन्होंने दोनों कंगन ब्राह्मण को दे दिए।

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

एच एस रांका फॅमेली
द्वारा
स्थापित एवम संचालित

रांका फेमेली फाउन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

25 वर्षों से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गर्ल्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलिसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- महासतीश्री यश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/ सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है – स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

Advt

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 07-08/11/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
नवम्बर 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 November, 2017

पधारिये। ।। चिचोंडी (शिराल) - आनंद जन्मभुमि ।। पधारिये

आनंद चरण तीर्थ

समर्पण समारोह - रविवार दि. १७ दिसंबर २०१७

पावन सान्निध्य एवं आशिर्वाद

आनंद तीर्थ प्रेरक पू. श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा एवं श्री चरणों में आस्थाशील श्रमण श्रमणी वृंद

जिनके आचरण के चरण से युग पावन बना,
जिनकी दृष्टी से धर्म अध्यात्म की सृष्टी हुअी ।
जिनके वचन वरदान के साथ प्रबोधक थे,
उन्होंने जिस भूमिपर जन्म लिया वह भूमि
भक्तों के लिये ''आनंद तीर्थ'' है ।

उसी भूमि में युगों युगों तक निर्मल, पवित्र, दिव्य आचरण के शक्ति प्रदाता की अनुभूती करने के लिये आपको आमंत्रण!
आनंद चरण के साथ ही व्यक्ति, परिवार एवं समाज में आनंदमय जीवन व्यवस्था के
बहुविध प्रकल्प के प्रथम सोपान का गुरुचरणों में समर्पण समारोह ।

* आनंद चरण तीर्थ * आनंदालय (ज्येष्ठ श्रावकों के लिए)
* तपसाधनालय - सुधर्मा समवशरण सभागृह * भक्त निवास * गौतम प्रसादालय * सेवाल
आनंद तीर्थ के इस प्रथम चरण का समर्पण समारोह के साथ द्वितीय चरण का भूमि शुध्दीकरण का ... क्रम
के भव्य समारोह में आप सहपरिवार आमंत्रित है ! यह समारोह आपका है, भक्तोंकी भक्ती का
आइए पधारिए सहपरिवार, सभी श्रीसंघ, नव युग निर्माण में सहभागी बनिए ।

* विनित *

गुरू आनंद फौंडेशन

मोबाईल : ९९२२५८०००० , ९३७१०००४०६, ९८५०७१४१६४
स्थान : आनंद तीर्थ, चिचोंडी (शिराल), ता. पाथर्डी, जि. अहमदनगर
टिप : चिचोंडी (शिराल) अहमदनगर से ३१ कि.मी, पूना से १५२ कि. मी. एवं औरंगाबाद से १०५ कि.मी.

Advt

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)
महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली-110 001 से प्रकाशित